अध्याय 15

भूमि के लिए अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा

पूर्वी राजाओं पर अब्राहम की जीत और सदोम के राजा तथा यरूशलेम के याजकीय राजा के साथ मुलाकात को कितना समय निकला यह बताना तो मुश्किल है। कितना भी समय रहा हो जिस आवाज़ ने 13:14-17 के समय बात की थी वह फिर से कुल पिता से बात करने लगी।

दिव्य वायदे और विश्वास का प्रत्युत्तर (15:1-6)

[1]इन बातों के पश्चात यहोवा को यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं। [2]अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएज़ेर होगा, सो तू मुझे क्या देगा? [3]और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा। [4]तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा। [5]और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। [6]उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।

आयत 1. "यहोवा का वचन अब्राम के पास पहुंचा," यह वाक्यांश एक साधारण तौर से उपयोग होने वाला फार्मूला था जो किसी संदेश या भविष्यवाणी के सम्बन्ध में भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचता था (यिर्म. 1:2; यहेज. 1:3; होशे 1:1; योना 1:1)। कुलपिताओं से और उनके शत्रुओं से बात करने के लिए परमेश्वर कभी-कभी **दर्शन** या स्वप्न का प्रयोग करता था (20:3, 6; 28:12; 31:10, 11, 24; 37:5-10; 46:2)।

20:7 में परमेश्वर अब्राहम को "नबी" सम्बोधित करता है। यह शब्द, जिसे बार-बार गलत समझा जाता है, उसे स्पष्ट किया जाना चाहिए। नबी के लिए प्रयोग किया गया इब्रानियों शब्द נָבִיא *(नबी)* है, जिसका अर्थ है "प्रवक्ता,"[1] वह व्यक्ति जो दूसरे के बदले बोलता हो। इसका एक उदाहरण हमें मूसा के मिस्र

वापस जाने की परमेश्वर द्वारा दी गयी बुलाहट में दिखता है। मूसा बहाने बनाता है - बोलने में असमर्थ होने के कारण - वह इस दिव्य आज्ञा से बचना चाहता था। फिर भी, यहोवा मूसा के झिझकने से नहीं रुका। दो अलग-अलग घटनाओं में, उसने मूसा को अपने शब्द देने का वायदा किया था, जो इसके बदले हारून को बोलने का मौका देगा; तब उसका भाई उसके स्थान पर प्रवक्ता या "नबी" की तरह कार्य करेगा (निर्गमन 4:15, 16; 7:1, 2) फिरौन और लोगों से बोलते समय।

बाइबलीय नबी वह व्यक्ति होता है जो वचन का प्रचार करता है। यकीनन, परमेश्वर के नबी कई बार भविष्य के बारे में बोलते हैं विशेषकर जब विनाश या आशा की होने वाली घटनाओं को बताना हो। उनका मुख्य कार्य परमेश्वर के वचन को प्रचार करना या सिखाना, परमेश्वर का गवाह बनना और परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने के लिए क्या करता है, इन बातों को बताना है। उन्हें यह भी लोगों को बताना था की परमेश्वर लोगों को उनके कार्यों तथा शब्दों के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है और उनका न्याय करता है। जब अब्राहम ने सच्चे परमेश्वर, परम प्रधान यहोवा, की गवाही दी, जिसने चार राजा जो पूर्व के थे उन पर विजय दिलाई थी (14:22-24); वह उस समय एक नबी के कार्य को कर रहा था।

यहोवा ने अब्राहम को चिताया की वह **भयभीत** न हो क्योंकि परमेश्वर उसकी **ढाल है** (देखें व्यव. 33:29; 2 शमूएल 22:3, 31; भजन 3:3; 7:10; 84:11) और उसे भरोसा दिलाया कि उसका **प्रतिफल बहुत बड़ा होगा**। यहाँ दर्ज किया गया बयान यह नहीं बताता कि क्यों अब्राहम इस समय भयभीत था। कुछ यह सुझाव देते हैं कि वह अपने शत्रुओं के दोबारा आक्रमण को लेकर चिंतित था, लेकिन, अब्राहम की व्यक्तिगत सेना और तीन एमोरी भाइयों की संयुक्त सेना के द्वारा उनकी निर्णायक पराजय होने के बाद यह होना असम्भव था। कुछ यह मानते हैं कि परमेश्वर का व्यक्तित्व अब्राहम के लिए भययोग्य था (15:12), यहाँ तक कि उद्धार के संदेश की उसकी अगली घोषणा भी उसके लोगों को घबराहट में डाल देने वाली थी (21:17; 26:24; 43:23; 46:3; निर्गमन 3:6)। हालाँकि परमेश्वर की उपस्थिति बड़े से बड़े विश्वास के योद्धा के दिलों में डर उत्पन्न कर सकता है, फिर भी हमारे पास वचन 1 में वर्णित डर को वचन 12 से 21 तक में दिए गये दर्शन के साथ जोड़ने का कोई वास्तविक कारण नहीं है, जो बाद में, सूरज डूबने के बाद वाली घटना में हुआ था।

इस पद के विषय में स्वाभाविक समझ यह है कि अब्राहम का डर किसी ऐसी बात के कारण था जो उसके हृदय पर काफ़ी बड़ा बोझ थी: एक शारीरिक वारिस का न होना। जब परमेश्वर ने उसे यकीन दिलाया की वह उसकी "ढाल" और उसके "प्रतिफल" का देने वाला है, तब अब्राहम ने अपनी परेशानी उसे बताई। वह इस प्रकार के विचारों को अपने हृदय में रखे हुए था: "यह अद्‌भुत है कि परमेश्वर ने मुझे कनान देश देने का और मेरे शत्रुओं से बचाने का वायदा

दिया है। उसने मुझे बहुत सारी भेड़ - बकरियां, मवेशी, और धन - सम्पत्ति दी हैं - लेकिन इन सबका क्या लाभ, यदि मेरे पास मेरी इस सम्पत्ति के लिए एक बेटा नहीं?" इसलिए यहोवा द्वारा अब्राहम को दिया गया शब्द "मत डर" शान्ति और आश्वासन का शब्द था, जो उसके और सारा के बुढ़ापे में होने और बाँझ होने के बावजूद दिया गया था और जिसके अनुसार उनके एक बेटा उत्पन्न होगा जो उनकी सारी आशीषों का वारिस होगा। (देखें 15:4, 5)।

आयत 2. अब्राहम को परमेश्वर की पहली बुलाहट मिले हुए कई वर्ष बीत चुके थे, जो उस समय एक जवान व्यक्ति था, और इस बुलाहट के अनुसार उसे ऊर छोड़कर जाना था और उसका वायदा था की वह उससे एक बड़ी जाति उत्पन्न करके, इस पृथ्वी की सभी जातियों को उसके वंश के द्वारा आशीषित करेगा (वंशज - विशेषकर, मसीह; देखें गला. 3:16), और उसे कनान देश दे देगा (11:31; 12:1-3; 13:15, 17; 15:7)।[2] कई जातियों का भविष्य में बनने वाला पिता यह आशा खो रहा था कि उसे कभी सारा से बच्चे होंगे। इसलिए, आखिरकार उसने **यहोवा** पर अपनी चिंता को प्रकट कर ही दिया: उसकी सबसे गहरी वेदना इस बात से उभरी थी की वह **निःसंतान** था। उसने बताया की **उसके घर का वारिस दमिश्की एलिएज़र होगा**।[3]

בֶּן-מֶשֶׁק *(बेन मेशक)* का "वारिस" के रूप में किया गया अनुवाद कुछ-कुछ संदेहास्पद है। यह इब्रानी शब्द पुराने नियम के लिए विशिष्ट है; इसलिए, इसे कई भिन्न-भिन्न तरीकों से दोहराया गया है। *बेन मेशेक* का शाब्दिक अर्थ "प्राप्त किया गया पुत्र।" इस अनुवाद के बजाय, अधिकतर अंग्रेजी संस्करण "वारिस" शब्द का प्रयोग करते हैं (RSV; NRSV; NEB; NASB)।[4] यह अनुमान इस तथ्य पर आधारित है कि यह शब्द 15:3.[5] में साधारण तौर से प्रयोग होने वाले शब्द "वारिस [हुआ]" के समानांतर प्रयोग होता है יָרַשׁ *(यारश)*।

आयत 3. अब्राहम ने प्रत्यक्ष तौर से दमिश्की एलिएज़ेर को गोद ले लिया था, जो उसके घर में एक बंधुआ **पैदा हुआ**, और उसका **वारिस बन** गया था। यह प्राचीन मेसोपोटामियन रिवाज़ के जैसा था, जिसके अनुसार एक व्यक्ति को जिसके स्वाभाविक सन्तान नहीं होने पर बंधुएँ को अपने वारिस के रूप में गोद लेने की अनुमति थी। इस गोद लिए गये पुत्र की ज़िम्मेदारी थी की जब तक उसके नए माता पिता जीवित रहे उनकी देखभाल करे, और उनके देहांत के बाद उन्हें सही रीति से मिट्टी दे। तब वह उनकी सम्पत्ति का अधिकारी बन सकता है। निस्संदेह, यदि इस जोड़े को गोद लेने के बाद स्वाभाविक पुत्र उत्पन्न होता है; तब वह प्रमुख वारिस कहलायेगा, जिसके कारण गोद लिए हुए पुत्र को पीछे हटना होगा।

निःसंतान दम्पत्ति का एक बंधुएँ को गोद लेने का चलन नुज़ी टेबलेट पर आधारित था। यह मिट्टी की पटिया कई हज़ारों की संख्या में थी और लगभग पन्द्रहवीं शताब्दी के समय की थी, इनकी खोज 1925 और 1931 के बीच नुज़ी में, जो उत्तर पूर्वी मेसोपोटामिया में स्थित था की गयी थी। हालाँकि इन पटियों

की तिथि अब्राहम के कई हज़ार साल बाद की है, क्योंकि प्राचीन निकटतम पूर्वी संस्कृति एक रुकी हुई संस्कृति थी, और वे उन्हीं हालातों और नियमों का पालन करते थे जिन्हें वे कई वर्षों से निभा रहे थे, इसलिए इनके लिखे जाने की तिथि के समय यही प्रचलित रही होंगी।[6]

आयत 4. यहोवा ने इस सम्भावना को नकार दिया की एलिएज़ेर एक गोद लिया हुआ **वारिस** बने। इसके बजाए, उसने काफ़ी ज़ोर देकर अब्राहम को वायदा किया कि उसका भी एक बेटा होगा जो उसी के मांस और लहू में से होगा, और उसी के **शरीर में से उसका वारिस बनेगा**। जैसा हमने अध्याय 16 में देखा, यह एक कठिन समस्या थी क्योंकि सारा के गर्भ धारण नहीं कर पा रही थी। कुछ समय के लिए, परमेश्वर ने अब्राहम की शंकाओं को यह समझाकर शांत किया कि यह वायदा उस तक एक व्यक्तिगत रीति से सीमित नहीं रहेगा, लेकिन आनेवाली कई पीढ़ियाँ उसमें शामिल होंगी।

आयत 5. यहोवा अब्राहम को **बाहर ले गया** और उसे **आकाश के तारों को गिनने के लिए कहा**। ऐसा करने के द्वारा, परमेश्वर ने उसका ध्यान उसके शरीर पर से हटा कर (15:4) उसके होनेवाले अनगिनत वंश की ओर ले जाकर कहा, **"तेरा वंश ऐसा ही होगा"** (देखें 22:17; 26:4)। अब्राहम न तो तारे गिन सकता था और न ही अपने आनेवाले वंश की **संख्या** को गिन सकता था जो स्वाभाविक तरीके से जन्म लेकर उसके वंश को बढ़ाएंगे। और यहाँ तक की वह अनुमान भी नहीं लगा सकता की विश्वास के द्वारा उसके कितने आत्मिक बच्चे होंगे (गला. 3:26-29)।

आयत 6. इस विस्तृत वायदे के प्रत्युत्तर में, अब्राहम ने **परमेश्वर पर विश्वास किया**। यह पहली बार है की क्रिया, "विश्वास" אָמַן *(अमन)* या इसकी संज्ञा का रूप "विश्वास" बाइबल में दिखाई देता है, हालाँकि यह पहली बार नहीं है जब अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया था। उसके विश्वास की यात्रा कई वर्ष पहले ऊर में शुरू हुई थी, जब परमेश्वर ने पहली बार उसे बुलाया था (11:31; 15:7; प्रेरितों 7:2), और इसे हारान में दी गयी बुलाहट में नवीकृत किया गया (11:31-12:5)। हालांकि, यह अभिपुष्टि कि अब्राहम "यहोवा पर विश्वास" करता था एक अधिक निर्णायक विश्वास की ओर संकेत करता है, जिसका अर्थ है कि वह यहोवा पर भरोसा करता था।[7] सम्बन्ध सूचक अव्यय "में" בְּ *(बे)* को "यहोवा" (יהוה, *यहवह)* से पहले लगाने पर न सिर्फ़ परमेश्वर के वायदों पर विश्वास की ओर संकेत करता है, परन्तु परमेश्वर पर विश्वास, भरोसा, या आसरा रखने की ओर भी इशारा करता है।[8]

अब्राहम के विश्वास के प्रति परमेश्वर का प्रत्युत्तर यह था की परमेश्वर ने **उसे धर्मी गिना था**। शब्द "हिसाब करना" इब्रानी शब्द חָשַׁב *(खशाब)* से लिया गया है जिसका अर्थ है "गिनना" या किसी के खाते में "जमा करना।" इस कार्य का उदाहरण गिनती 18:26-30 में मिलता है: इस्राएल के लोगों को अपने भाग का दशमांश लेवियों को देना था, जो, बदले में,उस दशमांश का दशमांश परमेश्वर

को देते। तब उसने लेवियों के दशमांश का इस रीति से "हिसाब लगाया" (गिना) जैसे कि वह उन्हीं के निज भाग में से हो। *खशाब* का यह सिद्धांत उसी तरह है जैसा दाऊद ने पाप के सम्बन्ध में, "एक नकारात्मक भाव से, व्यक्त किया था: क्या ही धन्य है वह ... मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा [*खशाब*, 'गिनना' या 'हिसाब'] न ले ... कपट न हो।" पाप के गिने न जाने का कारण यही था कि परमेश्वर ने पहले से ही उसके पाप को "क्षमा" किया और "ढांप दिया" था (भजन 32:1, 2)।

इस कथन में कि अब्राहम के विश्वास को, "उसकी धार्मिकता गिना गया," धार्मिकता צְדָקָה *(ज़िदाकाह)* का अर्थ क्या है? इस शब्द का पुराने नियम में प्रचलित प्रयोग उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में था जिन्होंने धार्मिकता के कार्य किए थे या वे नैतिक रूप से खर थे (उत्पत्ति 30:33; व्यव. 6:24, 25; यशा. 33:5; यहेज. 14:14, 20)। यह सदोम और अमोरा के लोगों द्वारा की जाने वाली दुष्टता के विपरीत थी। 20:4 में अबिमेलेक ने भी ऐसा ही अंतर किया था। जो व्यवस्था इस्राएल को बाद में दी गयी थी उसके अनुसार धर्मी को न्यायालय में निर्दोष *(ज़िदाकाह)* ठहराया जाये, जबकि दुष्ट को दोषी ठहराया जाए (व्यव. 25:1)।

यहेजकेल कहता है कि "एक मनुष्य धर्मी" तब कहलाता है जब वह "न्याय और धर्म" के कार्य करता है (यहेज. 18:5)। तब वह पाप और बुराइयों की एक लम्बी सूची भी शामिल करता है जो एक धार्मिक व्यक्ति को नहीं करने (यहेज. 18:6-8)। उसने इस विवरण का सारांश बताते हुए कहा, "'[जो मनुष्य] मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा मनुष्य धर्मी है, वह निश्चय जीवित रहेगा,' प्रभु यहोवा की यही वाणी है" (यहेज. 18:9)। भजन संहिता 1 का लिखने वाला बताता है की धर्मी जन वह है जो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी "व्यवस्था" पर ध्यान करता रहता है। ऐसा व्यक्ति "धन्य" है; यह वह है जिसे यहोवा "जानता" है יָדַע *(यादा)* "प्रमाणित"[9]; और वह दुष्ट की तुलना में स्थिर रहेगा, जो भूसी के समान "नाश" किए जायेंगे। (भजन 1:1, 2, 6)।

परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को धार्मिकता इसलिए नहीं गिना क्योंकि उसके कार्य और चरित्र ऐसे प्रतिफल के योग्य थे। उत्पत्ति 11:26-15:6 में हुए घटनाओं के क्रम में, हमें उसके चरित्र के विषय में कुछ भी इस योग्य नहीं मिलता जो परमेश्वर की दृष्टि में उसे धर्मी बना दे। बल्कि, "धार्मिकता" (परमेश्वर के साथ एक सही सम्बन्ध) अनुग्रह का दान था जो अब्राहम को उसके विश्वास (भरोसे) के लिए प्रदान किया गया था। उसने अपने भले कार्यों के द्वारा परमेश्वर पर कोई उपकार नहीं किया था जिससे उसे धर्मी होने की दिव्य मान्यता मिल जाए (रोमियों 3:21-28; 4:1-8; 5:17)।

वाचा के लिए तैयारी (15:7-11)

[7]और उसने उससे कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कस्दियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश का अधिकार दूं। [8]उसने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं इसका अधिकारी हूंगा? [9]यहोवा ने उससे कहा, मेरे लिये तीन वर्ष की एक कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेंढ़ा, और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले। [10]और इन सभों को ले कर, उसने बीच में से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आमने - सामने रखा: पर चिड़ियाओं को उसने टुकड़े न किया। [11]और जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया।

परमेश्वर ने अब्राहम से अद्भुत वायदे किए - इतने अद्भुत कि वे उसके लिए स्वीकार कर पाना भी कठिन था। अपने वायदों और एक - दूसरे के प्रति अपने विश्वासयोग्य सम्बन्ध की गारंटी के लिए, परमेश्वर ने इस बाइबलीय नायक के साथ एक अद्भुत विधि से वाचा बाँधी।

आयत 7. अब्राहम की वाचा का परिचय (15:7-11) मूसा की वाचा/दस आज्ञाओं की एक झलक थी जो अब्राहम के वंशजों को सिनै पर्वत पर दिये गये थे (निर्गमन 20:1, 2)। परमेश्वर अपना परिचय **यहोवा** (יהוה, *यहवह)* के रूप में देने के द्वारा अब्राहम के साथ बातचीत शुरू करता है। जिसके बाद परमेश्वर ने जो भी कुछ उस के लिए किया है वह सब भी दोहराता है। परमेश्वर कहता है की वह **उसे कसदियों के ऊर से निकाल कर उस देश में ले आया** जिसमें उसे रहना था (देखें 11:31; प्रेरितों 7:2-4)।

आयत 8. इस अवसर पर, परमेश्वर के प्रति अब्राहम का प्रत्युत्तर एक याचना थी। **उसने कहा, "हे परमेश्वर यहोवा, मैं कैसे जानूँ कि मैं इसका अधिकारी होगा?"** वह किसी प्रकार का ठोस सबूत चाहता था जिससे उसे यह यकीन मिल सके की एक दिन वास्तव में वह भूमि उसकी होगी (देखें 15:12-16)।

आयत 9. परमेश्वर ने कुल पिता को कुछ पशु और पक्षियों को बलि के लिया तैयार करने के लिए कहा। यह वे जन्तु हैं जिन्हें बाद में मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत इस्राएलियों को बलिदान करके छुड़ाने की आज्ञा दी गयी थी। यहोवा ने अब्राहम को **एक कलोर**, **एक बकरी**, **एक मेंढ़ा**, **एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा लाने का निर्देश दिया**। इन जन्तुओं के विषय में, इन सभी **की आयु तीन वर्ष** होनी थी, जो कि "एक आदर्श आयु थी।"[10] एक धनी व्यक्ति होने के कारण, कुलपति बड़ी आसानी से इस बलिदान को दे सकता था।

आयत 10. अब्राहम ने जानवरों को **दो टुकड़ों में काटकर** यहोवा को अर्पण किया, उसने **पक्षियों** को पूरा छोड़ दिया। इब्रानी शब्द "वाचा बांधना" का शाब्दिक अर्थ "वाचा तय करना [כָּרַת, *करात]* है (15:18)।" इस विवरण को देने

का कारण यह हो सकता है कि सभी बलिदान के पशुओं का गला कटा होना चाहिए, और कुछ वाचा की विधि के लिए दो हिस्सों में कटे होने चाहिए।

"वाचा तय करने" का एक अन्य उदाहरण यिर्मयाह 34:18, 19 में दिया गया है, जिसमें एक ऐसी घटना का वर्णन है जो 588-586 ई.पु. बेबीलोन की सेना द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी के समय हुआ था। नगर की परिस्थिति दयनीय थी, और बंधुआ मालिक अपने बंधुओं को नगर की सुरक्षा के लिए उपयोग करना चाहते थे। इसलिए वे स्त्री और पुरुष, दोनों इब्रानी बन्धुओं को छोड़ने के लिए तैयार थे। उन्होंने विधि पूर्ण वाचा बाँधी,जो एक बछड़े को दो हिस्सों में काटे जाने और उसके टुकड़ों के बीच में से गुज़रने के अनुष्ठान से मुहरबंद की गयी थी। नगर के सभी अगुवों ने इस रस्म में भाग लिया था, जिसमें यहूदा और यरूशलेम के अधिकारी, जैसे, न्यायाधीश, याजक, और अन्य लोग भी शामिल थे। मृत पशुओं के टुकड़ों के मध्य से निकलने के द्वारा, स्पष्ट रूप से उन्होंने अपने ऊपर श्राप ले लिया क्योंकि वे अपने बन्धुओं को स्वतंत्र करने में असफ़ल रहे। वध किए गये पशुओं के भयानक दृश्य, उन्हें मृत्यु से भयभीत कर रहे थे, यदि वे इस वाचा को त्याग देते तो। सारांश में,वे कह रहे थे कि, "यदि हम अपने निर्णय को पूरा न करें, तो जैसा इन पशुओं के साथ हुआ है ठीक वैसी ही दशा हम पर भी हो।"

जब फिरौन होफ्रा घिरे हुए नगर को बचाने के व्यर्थ प्रयास में यहूदा में अपनी सेना लेकर आया, तब बेबिलोनियों ने अस्थायी रूप से यरूशलेम से घेरा हटा लिया और मिस्रियों के विरुद्ध लड़ने चले गये। जब यह घटना घटी तब हर एक यहूदी बंधुआ मालिक अपने-अपने बन्धुओं को वापस लेने लगे और यहोवा के सामने ठहराई हुई शपथ को तोड़ने लगे; तब परमेश्वर ने उन पर "तलवार, मरी, और महंगी" नाज़िर की (यिर्म. 34:15-17)। उसने, "उन्हें उनके शत्रुओं के और जो उनके प्राणों के खोजी थे उनके हाथ में कर देने का वायदा किया" (यिर्म. 34:20)। यदि परमेश्वर के लोगों के अगुवे इतने कठोर हृदय के हैं जो अपने लोगों - इब्रानी स्त्री और पुरुष बन्धुओं - से यहोवा के नाम की शपथ खाने के बाद ऐसा निर्दयी व्यवहार करे, तो उन के लिए पापों के पश्चाताप की भी कोई आशा नहीं है। इसी कारण से, यहोवा ने अनिच्छा से तलवार, मरी, और महंगी द्वारा इस राष्ट्र को नाश किए जाने की अनुमति दी। जो उत्तरजीवी बन्धुआई में ले जाए गये उन्हें यह सीखना आवश्यक था कि वे बार-बार मूर्तिपूजा और हर प्रकार की बुराई छुटकारे के बाद नहीं कर सकते।

बाइबल के बाहर, ठीक ऐसे ही "वाचा तय करने" के उदाहरण भी प्राचीन निकटतम पूर्व के अनुबंधों में पाए जाते हैं। ऐसे ही एक उदाहरण में, जो आठवीं शताब्दी ई.पु. से था, एक मेमने को अनुबंध पूरा करने के लिए लाया गया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। वह अनुबंध इस प्रकार से था: "यह सिर इस मेमने का सिर नहीं है, यह मति'इलु का सिर है, यह उसके बेटों का सिर है, उसके अधिकारियों का, और उसके देश के लोगों का। यदि मति'इलु इस अनुबंध के विरूद्ध पाप करे, तो यह हो ... मति'इलु का सिर भी कट डाला जाए, और

उसके बेटों का भी।"[11] इसी समय का एक और लेख इस बात को प्रकट करता है कि यदि अनुबंध तोड़ा जाए तो क्या होगा। इसके अनुसार, "[जैसे] यह बछड़ा काटा गया है, वैसे ही मति'एल और उसके प्रधान काट डाले जायेंगे।"[12]

आयत 11. अब्राहम द्वारा विधिवत पशुओं का काटा जाना इस कथन के साथ खत्म होता है कि मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे। यह **पक्षी लोथों को खाने के लिए आये थे**, लेकिन **अब्राहम ने उन्हें उड़ा दिया**। पुराने नियम में अन्य जगह पर, अशुद्ध पक्षी अन्यजातियों को दर्शाते हैं (यहेज. 17:3, 7; ज़कर्याह 5:9; देखें लैव्य. 11:13-19; व्यव. 14:12-19)। इसलिए, कुछ यह सुझाव देते हैं कि बलिदान के पशु इस्राएल के राष्ट्र को दर्शाते हैं, और अब्राहम, एक तरह से, अपने भविष्य के वंशजों को अन्यजाति राष्ट्रों के आक्रमण से बचा रहा था। शायद, यह अनुवाद अब्राहम के कार्यों और प्रेरणाओं को कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ा के बताता है। यह प्राकृतिक घटना जिसमें कोई भी मृत जन्तु जो ज़मीन पर पड़ा हुआ हो उसके साथ घटने वाली घटनाओं के अवलोकन का सिर्फ़ एक सम्भावना मात्र ही है। मांसाहारी पक्षी ऐसे में स्वाभाविक रूप से आकर्षित होंगे, और कोई भी आराधक इनको यहोवा की आज्ञा को विधिवत रीति से पूरा करने के लिए बलि के पशुओं को खाने से अवश्य रोकता।

वाचा की भविष्यवाणी (15:12-16)

[12]जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी नींद आई और देखो, अत्यन्त भय और अन्धकार ने उसे छा लिया। [13]तब यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी हो कर रहेंगे और उसके देश के लोगों के दास हो जाएंगे और वे उन को चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे; [14]फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा और उसके पश्चात वे बड़ा धन वहां से ले कर निकल आएंगे। [15]तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा; तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्टी दी जाएगी। [16]पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर आएंगे: क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ।

आयत 12. जब **सूर्य अस्त होने लगा** तब **अब्राम को भारी नींद** תַּרְדֵּמָה *(थारदेमाह)* आ गई। यह उसी प्रकार का नींद है जिसे आदम ने उत्पत्ति 2:21 में अनुभव किया था और यह दूसरे स्थानों में इसका प्रयोग स्वप्न, दर्शन और प्रकाशन के लिए भी किया गया है (अय्यूब 4:13; 33:15)। इस विशेष घटना में गहरी नींद ने अब्राहम को **भय तथा अंधकार** में डाल दिया। बाइबल में लोगों ने अकसर परमेश्वर के उपस्थिति में बेजान सा अनुभव किया है। यह विशेषकर विस्मित करने वाली भविष्यवाणी के साथ होता था जिसमें व्यक्ति विशेष के जीवन या उसके वंशजों के जीवन में कठिन समय की भविष्यवाणी की जाती थी।

आयतें 13, 14. परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को स्पष्ट किया जिसमें अब्राहम को यह पुनः आश्वासन दिया गया कि उसके वंशज कनान के उत्तराधिकारी होंगे।

फिर भी, पहले वे **पराए देश में परदेशी** גֵּר *(गेर)* "परदेशी" **होंगे** जो उनका नहीं है। अब्राहम ने कालांतर में कनान में अपनी स्थिति के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया जब वह हेब्रोन के लोगों से अपनी पत्नी सारा के दफनाए जाने के बारे में बात कर रहा था (23:4)। यह शब्द अन्य जातियों के लिए जो कनान विजय के बाद प्रतिज्ञा के देश में रह रहे थे, के लिए भी प्रयोग किया गया है (लैव्य. 16:29; 17:8, 12, 15; 18:26; 19:10, 33, 34)। उन में से कुछ लोगों की असमंजसता के कारण, आज भी कनान देश में इस्राएली लोग अपने लिए इस शब्द *(गेर)* का प्रयोग करते हैं (लैव्य. 25:23; 1 इतिहास 29:15)।

परमेश्वर ने अभी अब्राहम पर उस देश के बारे में यह प्रकट नहीं किया है कि उसके वंशज **परदेशी और सताए हुए** लोगों के रूप में **चार सौ वर्ष** तक कहाँ/किस देश में रहेंगे (15:16 की टिप्पणी देखें)। न ही परमेश्वर ने इस बात को प्रकट किया कि वह उस सताने वाले **देश** को किस तरीके से दण्ड देगा और उसका **न्याय** कैसे चुकाएगा (देखें निर्गमन 7-11; 14) या फिर उस परिस्थिति के विषय में जो उनके अंततः उस देश से **बहुत धन के साथ बाहर निकलने** के समय होगा (देखें निर्गमन 12:35, 36)। संभवतः उसके हाल ही के अनुभव से अब्राहम ने अनुमान लगाया होगा कि मिस्र ही वह सताने वाला राष्ट्र हो सकता है जहाँ से उसके वंशज बड़े धनवान होकर निकलेंगे; लेकिन इसका भी पाठ में कोई संकेत नहीं दिया गया है।

आयत 15. परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि अपने पूर्वजों के समान, अब्राहम को अनिश्चित भविष्य की ओर पदार्पण नहीं होगा और वह अपने **पितरों में कुशल से मिल जाएगा** और **बुढ़ापे में उसे मिट्टी दी जाएगी**। मिस्र में फिरौन के साथ विचलित करने वाले अनुभव के विपरीत और पूर्व के चार राजाओं के विरूद्ध युद्ध के द्वारा यहोवा ने यह प्रगट किया कि जातियों का पिता दीर्घायु जीएगा और उसकी कुशल से मृत्यु होगी। इसका यह तात्पर्य नहीं हुआ कि उसको अब आगे तकलीफ़ें नहीं उठानी होगी, बल्कि उसके जीवन की आशीषें उन सभी कठिन समय से ऊपर होंगी। वस्तुतः अब्राहम अपने पृथ्वी के सफर के अंतिम पड़ाव में आया तो "बुढ़ापे में उसकी मृत्यु हुई" (175 वर्ष) और वह अपने "जीवन से संतुष्ट" था (25:7, 8)।

आयत 16. अब्राहम का भविष्य के प्रति चिंता कम होने के बाद, परमेश्वर उसके वंश के भविष्य की ओर लौट आता है कि वे **चौथी पीढ़ी में फिर यहाँ** अर्थात **कनान आएंगे**। कुछ लोगों का मानना है कि यह वक्तव्य 15:13 के विपरीत है जिसमें यह कहा गया है कि इस्राएली मिस्र में "चार सौ वर्ष" रहेंगे। वंशावली के लिए इब्रानी शब्द דּוֹר *(डोर)*, समय सीमा को इंगित करता है और यह वर्षों की संख्या को निर्धारित नहीं करता है। उदाहरण, मूसा लगभग चालीस वर्ष का था जब वह मिस्र से भागा था, उसकी मुलाकात सिप्पोरा से हुई, और फिर उससे उसका विवाह हुआ (प्रेरितों. 7:23-29); और इस्राएलियों को, उनके हठीलेपन और आज्ञा न मानने के कारण, चालीस वर्ष तक जंगल में भ्रमण करना

पड़ा - एक "पीढ़ी/वंश" (*डोर*; गिनती 32:13)। मूसा के समय में एक पीढ़ी चालीस वर्ष का समय होता था; अब्राहम के समय में इसको लगभग एक सौ वर्ष समझा गया होगा क्योंकि उस समय उसकी यही आयु रही होगी जब इसहाक पैदा हुआ था (17:17; 21:5) और वह 175 वर्ष जीवित रहा (25:7)।

उत्पत्ति 15:13 का "चार सौ वर्ष" सम संख्या है न कि एक विशेष समय या आयु (देखें प्रेरितों. 7:6)। यह बात निर्गमन 12:40, 41 के समय सारणी के संदर्भ से स्पष्ट है: "मिस्र में बसे हुए इस्राएलियों को चार सौ तीस वर्ष बीत गए थे। और उन चार सौ तीस वर्षों के बीतने पर, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई।"

उत्पत्ति 15:16 का आखिरी वक्तव्य यह वर्णन करता है कि क्यों परमेश्वर ने अब्राहम के संतानों को कनान देने में विलंब किया: **क्योंकि अब तक अमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ था।** "अमोरियों" जैसे शब्द पुराने नियम में स्थिर नहीं है; कभी-कभी यह उस देश में रह रहे कई लोगों में से एक विशेष समूह के लोगों को संबोधित करता है (15:21; निर्गमन 3:8) परंतु यह शब्द उन सभी लोगों के लिए भी प्रयोग किया गया है जो उस समय कनान में रहते थे (15:16; आमोस 2:10)।[13] इस शब्द का अर्थ बाद वाले अर्थ के समांतर है, क्योंकि कनान की विजय तब तक प्रारंभ नहीं होना था जब तक कि अमोरियों का अधर्म "पूरा" שָׁלֵם *(शालेम)* नहीं हुआ या फिर "भरा नहीं था।" यह इस बात की ओर इशारा करता है कि यहोवा अमोरियों के प्रति तब तक धरता था जब तक वह उनकी नैतिकता इतनी भ्रष्ट नहीं होती कि परमेश्वर उनको सहन नहीं कर सके।[14] इसलिए कनान पर विजय और उपनिवेश भी परमेश्वर के ईश्वरीय न्याय पर आधारित था (लैव्य. 18:24, 25; व्यव. 9:5) न कि इस्राएलियों के उग्र अतिक्रमण पर, जैसे कि कभी-कभी कुछ लोग बताते हैं।

अनगिनत पुरातत्व अवशेष और अमोरियों के प्राचीन साहित्य जो रास शमरा, लबानोन के उत्तर सीरिया के समुद्री तट से प्राप्त हुई हैं, कनानियों की भ्रष्टता प्रकट करती है कि उनकी आराधना बहु देवतावादी थी जिसमें मानव बलि भी शामिल था और इसमें छोटे बच्चे बलि किए जाते थे। इसके साथ ही मंदिरों में स्त्री तथा पुरुष वेश्यावृति भी शामिल थी और विभिन्न प्रकार के जादू टोना भी किए जाते थे। इस प्रकार का आचरण मूसा की व्यवस्था में मना है (लैव्य. 18:21-25; व्यव. 18:9-12)।

फिर भी,उत्तरी राज्य, इस्राएल के सभी राजाओं और दक्षिणी राज्य के अधिकांश राजाओं ने अन्य जातियों के धर्म और उनके भ्रष्ट आचरणों का समर्थन किया (1 राजा 14:21-24; 21:24-26)। यही मुख्य कारण है जिसके कारण परमेश्वर के लोगों ने राज्य खोया और बंधुआ होकर बाबुल गए। परमेश्वर ने उन्हें मूर्तिपूजा, बलि और हर प्रकार के दुष्टता, जैसे उसने अमोरियों के साथ किया, से वापस लौटने के लिए सैकड़ों वर्ष प्रदान किए लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया तो वे कनान के पूर्व निवासियों की भाँति परमेश्वर ने उन्हें देश से

बाहर कर दिया (व्यव. 29:22-28; 2 राजा 21:1-11; यहेज. 16:35-52; दानिय्येल 9:1-14)।

वाचा की पूर्ति (15:17-21)

[17]और ऐसा हुआ कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगीठी जिस में से धुआं उठता था और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच में से हो कर निकल गया। [18]उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि मिस्र के महानद से ले कर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है, [19]अर्थात, केनियों, कनिज्जियों, कद्मोनियों, [20]हित्तियों, परीज्जियों, रपाइयों, [21]अमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों और यबूसियों का देश मैं ने तेरे वंश को दिया है।

आयत 17. जब सूर्यास्त हुआ, तो अंधकार ने परमेश्वर के लिए अब्राहम के साथ वाचा बांधने के लिए मंच तैयार किया: अब्राहम ने एक **अंगीठी जिसमें से धुआं उठता था** और एक जलता हुआ पलीता देखा जो जानवरों के उन **टुकड़ों के बीच में से होकर निकल गया** जो भूमि पर पड़े थे। अंगीठी के लिए इब्रानी शब्द תַּנּוּר *(थनूर)* प्रयोग किया गया है जो संभवतः मिट्टी की बनी बेलनाकार वस्तु थी जिसका व्यास लगभग दो या तीन फुट रहा होगा। चूँकि धुआं और आग परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है (निर्गमन 3:2; 14:24; 19:18; 20:18; 24:17; भजन 18:8), तो यह यहोवा था जो प्रतीकात्मक बोली में बोल रहा था और जो जानवरों के उन टुकड़ों के मध्य अनुष्ठानिक रूप से चल रहा था।

आयत 18. ऐसा करने के द्वारा, परमेश्वर ने **अब्राम के साथ एकपक्षीय वाचा बांधी** या "काटा" *(कारथ)*। इसको द्विपक्षीय बनाने के लिए अब्राहम या उसके स्थान पर किसी अन्य को उन कटे हुए जानवरों के बीच, इस अनुष्ठान को पूरा करने के लिए चलना चाहिए था। इसके बजाय, यहोवा ने स्वयं इस बात की गंभीरता पूर्वक गारंटी दी कि वह स्वयं ही इस वाचा को पूरा करेगा।

क्या परमेश्वर ने 15:9, 10 और यिर्मयाह 34:18, 19 में वर्णित श्राप अपने ऊपर ले लिया? यदि वह इसको कुछ इस तरह दृढ़तापूर्वक कह रहा है, "यदि मैं इस वाचा को नहीं थामे रखता हूँ तो जिस तरह इन जानवरों के साथ किया गया, ऐसा ही मेरे साथ हो," तो यह सिर्फ़ एक रूपक है कि परमेश्वर ने अपने लिए मृत्यु मांगी क्योंकि वास्तव में वह नहीं मर सकता है। जो भी बात हो और जो बातें परमेश्वर ने बोली, अब्राहम ने इस दर्शन में एक अति प्रभावित करने वाला दृश्य देखा।

यद्यपि अब्राहम के **वंश** को भूमि का मालिकाना अधिकार कोई चार सौ वर्षों तक नहीं मिलने वाला है, फिर भी यहोवा ने कहा, **"मैंने यह भूमि [उन्हें] दे दिया है।"** अधिकांश आधुनिक अनुवाद "दे दिया" נָתַן *(नातान)* क्रिया की यह कहकर उपेक्षा करते हैं कि यह पूर्ण रूपक है जो भूतकाल में किए गए कार्य को प्रकट

करता है। वे इसका त्रुटिपूर्ण अनुवाद करते हैं कि "मैं यह भूमि देता हूँ" (RSV; NRSV; NIV; NEB)। NASB इसका ठीक अनुवाद करता है "मैंने दे दिया है।" यहाँ प्रयोग किया गया क्रिया "भविष्य पूर्ण" है जो "एक दूर भविष्य में घटित होने वाली घटना का वर्णन इस प्रकार करता है मानो वह पहले ही हो चुका हो।"[15] ऐसे संदर्भ में यह घटना यह दिखाती है कि यह बिल्कुल पूरी होने वाली है - जैसे कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है - तो इसके बारे में यह बोला जा सकता है मानो वह पहले ही हो चुका है।

यहोवा के वचन का अंत, भूमि के मालिकाना अधिकार पर केंद्रित है, यह भूमि की सीमा दक्षिण पश्चिम से लेकर **मिस्र की नदी** तक निर्धारित करती है। यह अभिव्यक्ति मिस्र की नदी נְהַר *(नाहार)* पुराने नियम में सिर्फ़ एक बार ही प्रयोग की गई है और यह नील नदी יְאֹר *(येओर)* के संदर्भ में नहीं प्रयोग किया गया है। संभवतः इसकी पहचान उत्तर पूर्व सिनै की वादी एल-आरीश के रूप में की जानी चाहिए जो दक्षिण इस्राएल के दक्षिण पश्चिम गाज़ा क्षेत्र से लगभग पचास मील की दूरी पर स्थित है। आर. के. हैरिसन के अनुसार, इसको और भी अधिक सटीकता से "मिस्र की प्रचंड वादी"[16] के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह अधिकांश सूखा रहता है,[17] लेकिन यह तीव्र नदी बन जाती है जब उत्तर सिनै पर्वत में वर्षा होती है और इसका पानी भूमध्य सागर की ओर बहता है।

प्रथम बार परमेश्वर यह प्रतिज्ञा कर रहा है कि अब्राहम के वंश "मिस्र के नदी" से उत्तर पूर्व के **परात नाम महानद** की **ज़मीन** तक, प्राप्त करेंगे (व्यव. 1:7; यहोशू 1:4)। जबकि, सैकड़ों वर्षों पश्चात, दाऊद और सुलैमान के समय, इस्राएलियों के पास इस भूमि का राजनैतिक और आर्थिक अधिकार था (2 शमूएल 8:3-15; 1 राजा 4:21, 24)। हालांकि, भूमि का कुछ हिस्सा कुछ ही वर्षों तक उनके अधिकार में रहा क्योंकि स्थानीय लोग बलवा करने लगे तथा इस्राएल का जुआ उतार फेंकने के लिए बलवा और विद्रोह करने लगे। सुलैमान की मृत्यु के साथ ही देश का विभाजन हो गया था और यह गृह युद्ध के कारण और भी बलहीन होता गया। इसलिए, इस्राएलियों को भूमि का एक बड़ा हिस्सा खो देना पड़ा जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा करके दिया था।

आयत 19. वाचा के दर्शन के साथ परमेश्वर ने अब्राहम को दस राष्ट्रों का नाम भी दिया जो वर्तमान में प्रतिज्ञा के देश को घेरे हुए हैं परंतु वह उसके वंशजों को दे दी जाएगी। यह सूची, आयत 19 से प्रारंभ होकर, पूर्णता का प्रतीक है। वे सभी नाम कनान वासियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी प्रकार की सत्ताईस अन्य सूचियां पुराने नियम में पाई जाती हैं, इसमें लोगों के समूह दो से बारह तक अलग-अलग है; यह उनके विशिष्टता पर आधारित है।[18] सामान्य सूची में छः (निर्गमन 3:8, 17; 23:23; 33:2; 34:11; व्यव. 20:17; यहोशू 9:1) या सात (व्यव. 7:1; यहोशू 3:10; 24:11; देखें प्रेरितों. 13:19) राष्ट्रों का वर्णन है। परमेश्वर ने कहा है कि वह उन सब को कनान से बाहर निकाल देगा। उत्पत्ति

15 सिर्फ़ एकलौती सूची है जिसमें दस नाम सम्मिलित किए गए हैं और सिर्फ़ इसी सूची में **अमोरियों**, **कनानियों और गिर्गाशियों** लोगों का समूह पाया जाता है जो संभवतः अब्राहम के दिनों में कनान के दक्षिणी भाग में रहते थे।

अंततः ये तीनों लोगों के समूह यहूदा के गोत्र में मिल गए होंगे; फिर भी, गिर्गाशियों का वर्णन बाइबल में सिर्फ़ इसी स्थान पर पाया जाता है और इसके अतिरिक्त इनके बारे में और कोई जानकारी नहीं पाई जाती है। हमारे पास केनियों के बारे में तीन संक्षिप्त संदर्भों के अलावा अधिक जानकारियाँ नहीं है। वे नेगेव में रहते थे (गिनती 24:21; 1 शमूएल 27:10) बाद में उनमें से कुछ उत्तर की ओर चलकर जबूलून के गोत्र में मिल गए (न्यायियों 4:11-17)। कालेब के कारण अमोरियों ने ख्याति प्राप्त की (गिनती 32:12; यहोशू 14:6, 14)। कालेब बारह भेदियों में से एक था; उसने यहोशू के साथ मिलकर कनान देश के बारे में अच्छा समाचार लाया (गिनती 13:30; 14:6-9, 24, 30)। उसने यहोशू के साथ मिलकर कनान विजय के लिए लड़ाई लड़ी और उसको ओत्नीएल न्यायी के साथ संबंधित किया गया है (न्यायियों 1:11-20)।

आयतें 20, 21. कनान के अन्य निवासियों में **हित्ती** लोग भी थे। वे हेब्रोन के आसपास रहते थे, जहाँ कालांतर में अब्राहम जाकर बस गया था (देखें 23:1-20)। कनान निवासियों के सूची में **परिज्जियों** का नाम अकसर पाया जाता है। ये लोग केन्द्रीय पहाड़ी क्षेत्र में रहते थे (यहोशू 11:3) और इनको एप्रैमी और मनश्शे के लोगों ने खदेड़ा था (यहोशू 17:15-18)। दक्षिण सूरिया और दक्षिण यरूशलेम में **रपाई** लोग फैले हुए थे, लेकिन उनमें से अधिकांश लोग गलील की झील के पूर्व की ओर बाशान में रहते थे (देखें 14:5)। यहाँ अन्य नामों में **अमोरी**, **गिर्गाशी और यबूशी** उधृत है (टिप्पणी देखें 10:15, 16)।

अनुप्रयोग

सुरक्षा और आवश्यकता की पूर्ति (अध्याय 15)

उसका भय और निराशा। अब्राहम भयभीत था। संभवतः वह आने वाले खतरे की आशंका से भयभीत था और उसे सुरक्षा की चिंता होने लगी थी। वह अभी-अभी चार पूर्व के राजाओं से विजय प्राप्त करके लौटा था (14:16-24), लेकिन क्या होगा जब वे अपनी सामर्थशाली सेना को लेकर वापस लौटेंगे? सबसे संभावित बात तो यह है कि वह अस्सी के दशक में है[19] और उसके कोई संतान नहीं था।

यह उस प्रकार की ग्लानि और भय है जब लोग कभी-कभी बड़े छुटकारे या विजय के अनुभव से होकर गुज़रते हैं। उदाहरण के लिए (1) परमेश्वर का जन मूसा, लाल समुद्र पर जब यहोवा ने उन्हें फिरौन की सेना से छुड़ाया था और जंगल में इस्राएलियों के लिए उसके उपाय (निर्गमन 17:4); (2) परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति दाऊद, जब उसने अपनी धार्मिकता और दया, शाऊल को न मार कर दिखाई (1 शमूएल 27:1) और (3) परमेश्वर का भविष्यवक्ता

एलिय्याह, जब यहोवा ने बाल और अशेरा के भविष्यवक्ताओं को हराने के बाद उसकी सेवकाई को स्थापित किया (1 राजा 19:1-14)।

विश्वास के लोगों की भी भावनाएं होती हैं और इन भावनाओं को अनदेखा, या उनकी उपेक्षा या अपमान नहीं किया जा सकता है। फिर भी भावनाओं के अति के कारण, हम कभी-कभी अंतरिम छोर तक चले जाते हैं और तब हम मसीहयत को ज्ञान तथा इच्छा शक्ति मात्र समझने लगते हैं; और तब हम अपने सभी भावनाओं के प्रति संदेह व्यक्त करने लगते हैं। यह दृष्टिकोण, लोगों के मन में दोष भावनाएं या असुरक्षा पैदा करता है जब वे शक, भय या निराशा अनुभव करते हैं; परंतु परमेश्वर प्रेमी स्वर्गीय पिता है और वह चाहता है कि उसके साथ हमारा ईमानदार संबंध हो कि हम अपना बोझ और परेशानियां उसके साथ बांटे। परमेश्वर यह नहीं चाहता है कि उसके लोग उस समय प्रसन्न होने का बहाना करें जब वे अपने विश्वास के साथ संघर्ष कर रहे हों और मानसिक रूप से पीड़ित हों। इसके विपरीत परमेश्वर यह चाहता है कि हम अपना बोझ उस पर डाल दें क्योंकि वह सचमुच हमारी चिंता करता है (1 पतरस 5:7)। जब लोग शक और भय के समय परमेश्वर से सहायता के लिए पुकारते हैं तो उस समय उनको उससे और उसके लोगों से प्रेम भरा आश्वासन और उत्साह की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर से उसकी सांत्वना का आश्वासन। परमेश्वर को मालूम था कि अब्राहम भय या शक का अनुभव कर रहा है। वह परमेश्वर के पास दोष लगाने की मंशा से नहीं जाता है बल्कि इस दर्शन के साथ कि वह भय मुक्त किया जाएगा। उत्पत्ति 15, इस वक्तव्य के साथ प्रारंभ होता है, "इन बातों के पश्चात यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं" (15:1)। यहाँ पहली बार बाइबल में "मत डर" जैसे उत्साह देने वाले वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। परमेश्वर ने इसको अनगिनत बार दोहराया है: इसहाक की जब गरार के चरवाहों के साथ मुठभेड़ हुई थी (26:24); याकूब जब मिस्र की ओर पलायन कर रहा था (46:3); और इस्राएली लोगों के साथ कई बार ऐसा हुआ जब वे मिस्र से पलायन कर जंगल में भ्रमण कर रहे थे (निर्गमन 14:13; 20:20; गिनती 14:9; व्यव. 1:21)। हर एक परिस्थिति में परमेश्वर ने इस वक्तव्य के साथ अपनी पहचान की "मैं हूँ" या जैसे मूसा ने उसको "परमेश्वर" या "यहोवा" करके संबोधित किया और उसको उन सभी बातों से जो उसने उनके लिए किया है या फिर वह अपने लोगों के लिए क्या कर सकता है, से संबंधित किया है।

नए नियम में कई बार "मत डर" वाक्यांश प्रयोग किया गया है, यह यीशु ने या फिर स्वर्गदूतों ने किया है। ये शब्द परमेश्वर का उसके लोगों के मध्य उपस्थिति और उनको आशीष देने की इच्छा को दर्शाता है। शांति देने वाले इस वाक्य को ज़कर्याह, यूसुफ, मरियम, शिष्यों, पौलुस और यूहन्ना के साथ दोहराया गया है।[20] जब परमेश्वर ने अब्राहम को न डरने के लिए कहा, तो उसे यह मालूम

था कि उसको कुछ और प्रतिज्ञाओं की आवश्यकता नहीं है बल्कि इस बात का आश्वासन कि यहोवा उसके साथ है और वह उसके जीवन में उसको आशीष देने के लिए हमेशा उपस्थित रहेगा।

परमेश्वर यह कहकर अपनी बात ज़ारी रखता है, "मैं तेरी ढाल מָגֵן *[मागेन]* हूँ" (15:1)। इससे परमेश्वर का यह तात्पर्य है कि अब्राहम के लिए वह मुसीबत के घड़ी में उसका ढाल बनेगा। नए नियम में पौलुस ने मसीहियों से यह विनती की कि वे "विश्वास की ढाल" थाम लें ताकि वे "शैतान के जलते हुए तीरों को बुझा सकें" (इफि. 6:16)।

इस प्रकार की सलाह कुछ मसीहियों के समझ के परे हो सकती है। वे सोचते हैं कि परमेश्वर और मसीह पर विश्वास इतना कोमल है कि उन्हें किसी भी प्रकार का सामना या धमकी से बचाना चाहिए और उन्हें इसका सर्वदा ध्यान रखना चाहिए। यदि आलंकारिक रूप से बोला जाए तो वे चाहेंगे कि हम अपने विश्वास (ढाल) को अपने अँगरखा (हथियार) में छिपाएं रखें ताकि कोई हमसे इसे छीन न ले। ऐसा लगता है कि पौलुस ठीक इसके विपरीत बोलता है, "तुम्हें अपने विश्वास (तुम्हारी ढाल) की रक्षा नहीं करना है। इसे बाहर निकालें और इसका अभ्यास करें और यह तुम्हारी रक्षा करेगा!"

अगला, परमेश्वर ने एक बड़ा "प्रतिफल" द्वारा विश्राम का आश्वासन दिया है (15:1)। इस अवसर पर कुलपति इस प्रकार के प्रतिज्ञा से संतुष्ट नहीं था। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वर्षों पहले जब से उसने ऊर छोड़ा है, उसके लिए वह परमेश्वर की सराहना नहीं कर रहा है। बेशक, अब्राहम, परमेश्वर के प्रति धन्यवाद है कि उसने उसे अपार धन, पशु और जानवर, उसके शत्रुओं से रक्षा और कनान देश देने जैसे प्रतिज्ञा से आशीषित किया है; लेकिन इन आशीषों का लाभ उठाने के लिए उसके संतान नहीं है। इस गहरी चिंता ने अब्राहम को यह प्रेरित किया कि वह परमेश्वर के सम्मुख ईमानदार हो और उससे यह प्रकट करे कि उसके हृदय में क्या है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा से उसको निराशा। विशेषकर अब्राहम इस बात से निराश था कि उसके अपने संतान नहीं है। प्राचीन काल में विवाह उपरांत पति और पत्नी की यह इच्छा रहती थी कि परमेश्वर उन्हें संतान देकर आशीषित करे। जब विवाहित जोड़े के बच्चे नहीं होते थे तो उनके इस अवस्था (बाँझपन) को उन पर एक प्रकार का श्राप माना जाता था (25:21; 30:1, 2; 1 शमूएल 1:1, 2, 7, 19)।

यद्यपि परमेश्वर ने बार-बार यह दोहराया कि अब्राहम एक दिन महान राष्ट्र बनेगा, परंतु वह स्वयं अस्सी के दशक व सारा सत्तर के दशक में थी - और वह अभी भी बाँझ थी (देखें 12:4; 16:3; 17:17)। संतान न होने से अब्राहम के मन में गहरा आघात पहुँचा। अपने और अपनी पत्नी की बढ़ती उम्र को देखते हुए वह इस बात की कल्पना नहीं कर पा रहा था कि परमेश्वर कैसे इस प्रतिज्ञा को पूरा करने वाला है। क्योंकि कुलपति ने कई वर्षों तक विलम्बित आशा लिए प्रतीक्षा

की थी, उसके हृदय में निराशा छा गयी थी और उसके पश्चात निराश होना तो स्वाभाविक था। उसके हिसाब से, परमेश्वर उसे उसका उत्तराधिकारी देने में कुछ भी नहीं कर रहा था; इसलिए अब्राहम ने परमेश्वर से शिकायत की कि वह संतानहीन है और कहा कि उसने दमिश्की एलिएज़ेर को अपना उत्तराधिकारी बना लिया है (15:2, 3)।

परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को और भी विशिष्ट बनाकर अब्राहम को उत्साहित किया। जब परमेश्वर का वचन अब्राहम के पास दोबारा पहुँचा, तो उसे यह बताया गया कि एलिएज़ेर उसका उत्तराधिकारी नहीं होगा। उसका एक बच्चा पैदा होगा और उस बच्चे के द्वारा उसके सभी वंशज सभी आशीषों का लाभ उठाएंगे जिनको परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी (15:4)। परमेश्वर ने एक उदाहरण देकर अपनी प्रतिज्ञा की पुष्टि की: उसने अब्राहम से कहा कि वह आकाश के तारों को देखे और बताए कि क्या वह उनको गिन सकता है या नहीं। परमेश्वर ने यह कहकर समाप्त किया, "तेरा वंश ऐसा ही होगा" (15:5)। अब्राहम और सारा को विश्वास का एक कठिन पाठ सीखना था - एक ऐसा पाठ जिसे हम सबको सीखना है: *परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसके अनुसार और उसके समयानुसार ही पूरी होगी।* परमेश्वर के लोगों ने सर्वदा ही धर्मियों के प्रति उसके आशीषों को पूरी होने और दुष्टों का न्याय में देरी के लिए संघर्ष किया है।

भजनकार ने परमेश्वर से यह विनती की कि वह विलंब न करे बल्कि वह नींद से जाग जाए और अपने लोगों को सर्वदा न त्यागे (भजन 44:23)। उसे यह लगा कि परमेश्वर ने इस्राएल के "दुःख और सताव" को भुला दिया है जिसके कारण उनको राष्ट्रों के मध्य "तितर बितर होकर रहना पड़ रहा है" (भजन 44:11, 24; देखें 9:19; 102:13)। उसी तरह, यिर्मयाह की सेवकाई के चालीस वर्ष के दौरान, उसने अपनी पीड़ा को छः विलापगीत में लिख डाला। उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि आखिर परमेश्वर दुष्टों का न्याय क्यों नहीं कर रहा है। भविष्यवक्ता अपनी सेवकाई में विश्वासयोग्य था परंतु यरूशलेम के लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया। उस नगर के लोगों ने भी उसका मज़ाक उड़ाया, जहाँ उसका पालन पोषण हुआ था, उसके रिश्तेदारों ने भी नाम लेकर उसका मज़ाक उड़ाया, उसके विरूद्ध योजनाएं बनाई और उसके जीवन को समाप्त करने की युक्ति भी बनाई (यिर्म. 11:18-23; 15:10-18; 17:14-18; 18:18-23; 20:7-18)।

नए नियम में, पतरस उन लोगों को जानता था जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह का दुष्टों का न्याय करने तथा धर्मियों को निर्दोष ठहराने के लिए दोबारा आगमन को मज़ाक समझा। उसने उसके "प्रतिज्ञा" के पूर्ति में देरी को उनके ईश निंदा करने का कारण ठहराया। लेकिन प्रेरित ने प्रभु के पुनरागमन में देरी का कारण यह बताया कि कोई भी नाश न हो परंतु सबको पश्चाताप का अवसर मिले (2 पतरस 3:3, 4, 9)। स्वर्गीय वेदी के नीचे धर्मी शहीद यह पुकारते रहते हैं, "हे स्वामी, हे

पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लहू का पलटा कब तक न लेगा?" (प्रका. 6:10)

परमेश्वर के बहुधा कई उद्देश्य होते हैं जिन्हें मानवीय तर्कों से नहीं समझा जा सकता है। संभवतः अब्राहम पहला व्यक्ति रहा होगा जिसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति में देरी होने के संबंध में शिकायत की होगी, परंतु निश्चय ही वह आखिरी व्यक्ति नहीं था। उसको और सारा को इसका कतई विचार नहीं रहा होगा कि इसहाक के पैदा होने के लिए परमेश्वर तब तक प्रतीक्षा करेगा जब तक कि उनकी शरीर "मृत सदृश" न हो जाए (रोमियों 4:19)। ऐसा करने का कारण यह था कि परमेश्वर यह बताना चाहता था कि "उसके लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है" (18:14)। इस प्रकार की जीवन दायिनी सामर्थ्य का अभ्यास करके परमेश्वर यह निश्चित करना चाहता था कि महिमा सिर्फ़ उसी की है। वह आने वाले भावी पीढ़ी को उस पर विश्वास करने का यह कारण बताना चाहता था कि वह सच्चा परमेश्वर है और उसकी सेवा खुशी से की जाए। विश्वासियों का पिता, सब युग में परमेश्वर के लोगों जैसा, "यहोवा की बाट जोहना" (यशा. 40:31), साधारण शब्दों में परमेश्वर पर भरोसा करने वाला विश्वास चाहिए।

विश्वास के प्रति उसका प्रत्युत्तर। परमेश्वर ने जैसे पहले किया था, एक बार फिर उसने अब्राहम को यह सुसमाचार दिया कि वह कौन है और मानवजाति को आशीष देने के लिए वह क्या करता है। उसने उसे यह भरोसा दिलाया कि उसका अपना बच्चा पैदा होगा और उसके वंशज आकाश के तारागण जैसे असंख्य होंगे। इस सुसमाचार के प्रत्युत्तर में, "[अब्राहम] ने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना" (15:6)। हालांकि यह कुलपति के विश्वास का आरंभ नहीं था। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि "विश्वास ही से" अब्राहम ने जब वह मेसोपोटामिया था तो परमेश्वर के बुलाहट का प्रत्युत्तर दिया। "विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ; तौभी निकल गया" (इब्रा. 11:8)।

बाइबल हमें यह बताती है कि जैसे एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ आगे बढ़ना सीखता है, वैसे ही विश्वास धीरे-धीरे बढ़ता है। प्रभु के शिष्य ऐसे विश्वासी थे जिन्होंने अपना व्यवसाय छोड़ा और उसके पीछे हो लिए; लेकिन समय-समय पर उसने उनके "अल्पविश्वासी" होने के लिए भी डांटा (मत्ती 6:30; 8:26; 16:8; 17:20)। शिष्यों को इस बात का ज्ञान हुआ कि उन्हें इससे भी अधिक विश्वास की आवश्यकता है इसलिए उन्होंने उससे उनके विश्वास को "बढ़ाने" की विनती की (लूका 17:5)। कभी-कभी प्रभु ने किसी व्यक्ति विशेष को उसके "बड़े विश्वास" के लिए उसकी सराहना की (मत्ती 8:10; 15:28)। हम यूहन्ना रचित सुसमाचार से यह भी जानते हैं कि कुछ लोग विश्वास करने के बाद भी नहीं बचाये गए क्योंकि वे पाप में जकड़े हुए थे (यूहन्ना 8:31-44)। यहाँ तक कि कुछ यहूदी अगुओं ने यीशु पर विश्वास तो किया लेकिन आराधनालय से बाहर निकाले जाने

के भय से उन्होंने उस पर अपने विश्वास का अंगीकार नहीं किया। "तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फ़रीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं" (यूहन्ना 12:42, 43)।

अब्राहम का विश्वास शिष्यों के विश्वास जैसे ही था। उसने परमेश्वर के साथ चलना प्रारंभ तो किया लेकिन कई बार उसको अपना विश्वास को बढ़ाने की आवश्यकता पड़ी। शिष्यों को विश्वास और आज्ञाकारिता में परिपक्व होने के लिए कठिन अभ्यास करना पड़ता था। उन्होंने यीशु का अनुकरण किया और सामाजिक रूप से लगभग तीन वर्ष तक उसके साथ खड़े रहे; फिर भी गतसमनी में जब वह पकड़वाया गया तो वे डर गए और वे रात के अंधेरे में भाग गए।

अब्राहम ने सामाजिक रूप से सदोम के राजा, मलिकिसिदक और अमोरी भाइयों के सामने सर्वशक्तिमान यहोवा पर अपने विश्वास का अंगीकार किया (14:22-24)। इस समय तक अब्राहम ने अपने जीवन में, न सिर्फ़ परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया बल्कि व्यक्तिगत रूप से उसने उस पर भी विश्वास किया और अब उसने उस पर पहले से भी अधिक विश्वास जताया। इसलिए मूल पाठ यह कहता है, "उसने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना" (15:6)। पौलुस ने इस विचार को रोमियों की पत्री में लिखा कि दो मार्ग है जिसके द्वारा धार्मिकता प्राप्त की जा सकती है: (1) धार्मिकता की अवस्था पाने के लिए एक व्यक्ति को बहुत ढेर सारे अच्छे कार्य करने होंगे या (2) फिर प्रभु यीशु पर विश्वास करके परमेश्वर के अनुग्रह से एक वरदान के रूप में यह प्राप्त किया जाए (रोमियों 4:1-5)। यदि "धार्मिकता" परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे कार्य करके प्राप्त की जा सकती थी तो हम इसके विषय में यह कहकर घमण्ड कर सकते थे कि "देखो, मैंने क्या किया है!" हाँ, यह तो असंभव है! हम सिर्फ़ यह कह सकते हैं, "देखो, परमेश्वर ने, यीशु मेरे उद्धारकर्ता के द्वारा मुझ अयोग्य के लिए क्या किया है।" उद्धार मनुष्य के कर्मों/उपलब्धियों के द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता है; यह तो यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य से प्राप्त होता है जो संसार की मानव जाति के पाप के लिए मरा ताकि मानव जाति "धार्मिकता का वरदान" उसके अनुग्रह से प्राप्त करे (रोमियों 3:20-22; 5:17)। जैसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ विश्वास से किया वैसे ही वह हमारी धार्मिकता भी गिनता है। जैसे हम "मसीह में बपतिस्मा" लेते हैं तो हम ईश्वरीय प्रतिज्ञा के अनुसार जो अब्राहम को दी गई थी के द्वारा उसके संतान और "उत्तराधिकारी" बन जाते हैं (गला. 3:26-29)।

उसके विश्वास की पुष्टि। सर्वप्रथम, परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को सुसमाचार देने के द्वारा बढ़ाया। कुलपति (अब्राहम) को यह भी स्मरण दिलाया कि वह (परमेश्वर) कौन है और उसने उसके लिए क्या किया है। उसने कहा, "और उसने उससे कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश [कनान] का अधिकार दूं" (15:7)। पौलुस, रोम और

कुरिंथ में कुछ इससे मिलते जुलते कारणों के लिए प्रचार करना चाहता था: उनके मसीही विश्वास को वह यह स्मरण दिलाकर दृढ़ करना चाहता है कि परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा उनके लिए कैसे-कैसे काम किए हैं (रोमियों 1:15, 16; 1 कुरि. 15:1-4)।

यदि ठीक समझा जाए तो स्मरण किसी व्यक्ति विशेष का विश्वास और आशा को उत्तेजित करता है। समस्या यह है कि जिन बातों को हमें स्मरण रखना चाहिए उन्हें हम भूला देते हैं और जिन बातों को भूला देना चाहिए उन्हें हम स्मरण रखते हैं। हमारे या हमारे प्रिय जनों के प्रति किए गए अपराध हम नहीं भूलते हैं जब कि मसीही जीवन के कुछ सिद्धांतों को स्मरण रखना अति कठिन हो जाता है। अपराध या कड़वाहट मसीह में हमारे आनंद को छीन सकता है और दूसरों के प्रति हमारी गवाही को नष्ट कर सकता है।

पौलुस, हृदय परिवर्तन से पूर्व किए गए मसीहियों पर अत्याचार के दोष/अपराध या फिर यहूदीकरण करने वालों या अपने भाइयों के हाथों से जो दुःख उसने उठाए थे, में डूब सकता था। फिर भी उसने कहा, "परन्तु सिर्फ़ यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (फिलि. 3:13, 14)। पौलुस ने अपने भूतकाल के पापों का वर्णन सिर्फ़ परमेश्वर को महिमा देने के लिए किया, जिसने उसको दया और पाप क्षमा प्रदान किए, जिसने उसके जीवन को पूरी तरह बदल दिया और दूसरों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा। पौलुस का अपने व्यक्तिगत जीवन की इतिहास की पुनरावृति उसके भूतकाल की रोगाणु जीवन पर ठहरे रहना नहीं है बल्कि यह तो यह कहने के लिए है कि "यदि परमेश्वर ने मुझे प्रेम किया, मेरे पाप क्षमा की और मुझे बचाया है - जो मुख्य पापी है - तब सबके लिए आशा है, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता है कि आपने कितने भी घिनौने पाप क्यों न किए हों" (देखें प्रेरितों. 9:1-22; 22:3-21; 26:2-23; 1 तीमु. 1:12-17)।

दूसरी बात, परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की पुष्टि इस वाचा के द्वारा की कि उसके संतान कनान देश के उत्तराधिकारी होंगे। प्राचीन संसार में वाचा को हल्के में नहीं लिया जाता था और न ही इसे आसानी से तोड़ा जा सकता था। वाचा को तोड़ना एक गंभीर विषय था और यदि किसी ने ऐसा किया तो ऐसे करने वाले के प्रति मृत्युदंड दिया जाता है (देखें यिर्म. 34:12-22)। अधिकांश वाचा में एक से अधिक जानवरों का लहू बलिदान के रूप में बहाया जाता था और इसके साथ ही यहोवा के सामने शपथ ली जाती थी कि यह वाचा बनी रहेगी।

ऐसे अवसर पर वाचा के लिए यदि अब्राहम को किसी जानवर को मारना भी था तो यह सिर्फ़ यहोवा ही है जिसने शपथ खाई। यह भविष्य के प्रति एक वाक्यांश से प्रारंभ हुआ: "यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी हो

कर रहेंगे, और उसके देश के लोगों के दास हो जाएंगे; और वे उन को चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे" (15:13)। परमेश्वर ने तब यह प्रतिज्ञा की कि वह सताने वालों का न्याय करेगा और कहा कि उसके बाद अब्राहम के संतान "बड़े संपत्ति के साथ वहाँ से निकलेंगे" (15:14)। अंतिम आश्वासन के रूप में, उसने यह दोहराया, "मिस्र के महानद से ले कर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है ... मैं ने तेरे वंश को दिया है" (15:18)।

सिनै पर्वत पर परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों के साथ जो वाचा बांधी थी उसमें भी इसी प्रकार की कई विशेषताएं थीं। अब्राहम की वाचा के समान, यह भी कई सुसमाचारों के साथ प्रारंभ हुआ जैसे कि परमेश्वर कौन है और उसने इस्राएलियों को आशीष देने के लिए और उन्हें छुड़ाने के लिए क्या-क्या किया है: "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है" (निर्गमन 20:2)। उसके बाद यह दस आज्ञाओं तथा अन्य आज्ञाओं के साथ ज़ारी रहता है (निर्गमन 20:3-23:33) जो "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" बनने के लिए निर्देश था (निर्गमन 19:6)। "तब मूसा ने लोगों के पास जा कर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए; तब सब लोग एक स्वर से बोल उठे, कि जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे" (निर्गमन 24:3)। तब जानवर होमबलि तथा मेलबलि के लिए काटे गए और तब मूसा ने उसमें से कुछ लहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया। फिर थोड़ा और लहू लेकर उसने इस्राएली लोग एवं परमेश्वर के मध्य वाचा पक्की होने के लिए लोगों पर भी छिड़क दिया। इसके साथ ही सब पूरा हो गया और उसने कहा, "देखो, यह उस वाचा का लहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है" (निर्गमन 24:8)।

कालांतर में बाइबल के लेखकों ने वाचा की इस भाषा को लेकर परमेश्वर का मेमना यीशु, जिसका लहू संसार के पाप से छुड़ाने के बदले बलि करके जो बहाया गया था, का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया है (यशा. 53:10, 12; यूहन्ना 1:29, 36; रोमियों 3:25; 1 यूहन्ना 1:7; 2:2)। जब वह फ़सह के भोज में प्रभु भोज की विधि की स्थापना कर रहे थे तो रोटी के संबंध में उसने यह कहा, "यह मेरी देह है।" प्याला के संदर्भ लेकर उसने शिष्यों से कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है" (मत्ती 26:26, 28)। जिस प्रकार अब्राहम और मूसा का लहू से संबंधित बलिदान, परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंध का समर्थन करता है, उसी प्रकार यीशु का लहू हमें परमेश्वर का पुत्र होने के संबंध का जामिन ठहरता है। जबकि जानवरों का बलिदान, कनान देश की प्रतिज्ञा की आशीष को पक्का करता है तो हमारा सर्वसिद्ध, सबके लिए एक बार का बलिदान - यीशु - हमें एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश की जामिन देता है (इब्रा. 11:16; देखें 12:22)।

उपसंहार। जो बातें प्रतिज्ञा की गईं हैं उनको प्राप्त करने के लिए हमें प्रभु के साथ बांधी गई वाचा में स्थिर रहना है और "बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो

जीवित परमेश्वर से दूर हटाए" (इब्रा. 3:12)। यही प्रथम पीढ़ी के अधिकांश इस्राएलियों के साथ हुआ। वे अपने वाचा के समर्पण से पीछे हटे, परमेश्वर को त्यागा और जंगल में मर गए। इसलिए उन्होंने कभी भी उसके प्रतिज्ञा के देश के विश्राम का आनंद नहीं उठाया (इब्रा. 4:3)। प्रथम सदी में भी, कुछ यहूदी विश्वासी, मसीह, जो नए वाचा के अंतर्गत पापों के लिए एकलौता बलिदान है, से पीछे हटने के खतरे में थे (इब्रा. 10:26)। उन्हें इस बात की चेतावनी दी गई कि उनका दृष्टिकोण और कार्य ठीक नहीं है; वे "परमेश्वर के पुत्र के पैरों तले" कुचले जाने के दोषी ठहर सकते हैं और "वाचा के लहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है" और यहाँ तक कि उन्होंने "अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया" (इब्रा. 10:29)।

हर युग में परमेश्वर के लोगों के लिए यही चेतावनी है: हमें मसीह की बलिदान को यूँ ही नहीं लेना चाहिए और न ही वचन या कार्य के द्वारा इसकी अवमानना करना चाहिए क्योंकि इसके बिना हमारा उद्धार और अनंत भविष्य सुरक्षित नहीं है। पतरस ने घोषणा की कि "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों 4:12)।

परमेश्वर के प्रतिज्ञा की शर्तिया स्वरूप (15:7-21)

वर्तमान में कुछ लोगों का मानना है कि इस्राएल देश (प्राचीन कनान) सिर्फ़ यहूदी लोगों का है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें यह देश बिना शर्त और न पलटने वाले उपहार के रूप में दिया है।[21] हालांकि इस मत के प्रतिनिधि यह स्वीकार करते हैं कि कई पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ शर्तिया है, जबकि कुछ मानते हैं कि ज़मीन के विषय प्रतिज्ञा शर्तिया नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके संतानों को कनान देश हमेशा के लिए देने की शपथ खायी थी। फिर भी, जब परमेश्वर और उसके गुणों के विषय हम बातें करते हैं तो "हमेशा" עוֹלָם *(ओलाम)* शब्द अस्थायी सिद्धांत और कार्यों के विषय बातें करता है परंतु उसका प्रभाव "युगों" या "अनिश्चित काल" (दीर्घ या लघु) तक रहता है न कि अनंतकाल तक। आगे हमें स्मरण रखना है प्रतिज्ञा या भविष्यवाणियाँ, चाहे वे ईश्वरीय शपथ के साथ ही क्यों न हो, शर्तिया हो सकता है।

1. *ज़मीन की प्रतिज्ञा का शर्तिया स्वरूप।* प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से पहले, मूसा का इस्राएलियों के लिए जंगल में एक संदेश में, लोगों को स्पष्ट चेतावनी दी गई है,

> और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुंचाए *जिसके* विषय में उसने तेरे बाप दादा, अब्राहम, इसहाक, और याकूब नाम, *तेरे पूर्वजों* से तुझे देने की *शपथ खाई* נִשְׁבַּע *[शाबा]*, और जब वह तुझ को बड़े-बड़े और अच्छे नगर, जो तू ने नहीं बनाए, और अच्छे-अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर, जो तू ने नहीं भरे, और खुदे हुए कुंए, जो तू ने नहीं खोदे, और दाख की बारियां और जलपाई के वृक्ष, जो तू ने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएं जब वह दे, और तू खाकर तृप्त हो,

> तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है। अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना। तुम पराए देवताओं के, अर्थात अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जल उठने वाला ईश्वर है; *कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले* (व्यव. 6:10-15)।

मूसा के अनुसार, यदि इस्राएली लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य न रहें तो वे न सिर्फ़ ज़मीन से हाथ धो बैठेंगे बल्कि उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा। यद्यपि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के देश में इस्राएलियों के अस्तित्व के विषय शपथ खाई है लेकिन इसकी पूर्ति भी शर्तिया है।

वाचा की आशीष और श्राप के मध्य (व्यव. 28:1-21), मूसा ने परमेश्वर का इस्राएलियों के साथ "यदि … तब" वाचा के शर्तों पर ज़ोर दिया है:

> यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं, चौकसी से पूरी करने का चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा। ... यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गों पर चले, *तो वह अपनी शपथ [shaba'] के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा।* ... और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा, था उस में वह तेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा ...। परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, ... तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे ...। और यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ में फैलकर उस समय तक लगी रहेगी, जब तक जिस भूमि के अधिकारी होने के लिये तू जा रहा है उस से तेरा अन्त न हो जाए (व्यव. 28:1-21)।

चाहे परमेश्वर ने इस्राएल को कनान देश देने के बारे में शपथ खाई हो तौभी यह प्रगट है कि प्रतिज्ञा शर्तिया है जो लोगों का उसके (परमेश्वर) प्रति आज्ञा मानने पर आधारित है। वस्तुतः बाइबल के लेखकों ने शपथ को दोधारी करके चरितार्थ किया है: यदि इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया तो उन्हें आशीष मिलेगी और ऐसा नहीं किया तो उन्हें श्राप मिलेगा। दानिय्येल, जो ई.पू. 605 में बाबुल की प्रथम बंधुआ में शामिल था, ने इस्राएली द्वारा देश खोने और बाबुल की बंधुआई का वर्णन किया है।

> वरन सब इस्राएलियों ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया, और ऐसे हट गए कि तेरी नहीं सुनी। *इस कारण जिस शाप की चर्चा परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है,* वह शाप हम पर घट गया, क्योंकि हम ने उसके विरुद्ध पाप किया है। सो उसने हमारे और न्यायियों के विषय जो वचन कहे थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है; यहां तक कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पड़ी है, वैसी सारी धरती पर और कहीं नहीं पड़ी

(दानिय्येल 9:11, 12)।

587 ई.पू. में बाबुल के लोगों द्वारा यरूशलेम के चढ़ाई के समय जब यहूदा का अंत निकट था तो यिर्मयाह ने विलाप किया। भविष्यवक्ता सच्चाई जानता था और उसने परमेश्वर की चेतावनी दे दी थी। परमेश्वर की शपथ के बावजूद कि वह कनान देश को उनको उत्तराधिकारी के रूप में देगा, उसने लिखा कि यहूदा पर लोगों के आज्ञा न मानने के कारण, विपत्ति आ रही है:

> तू अपने इस्राएली लोगों को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों के साथ निकाल लाया ... और उनको यह देश दिया, *जिसको तूने इनके पूर्वजों को देने की शपथ [शाबा] खाई थी*। ... वे इसमें आए और इसके अधिकारी हो गए, *परन्तु उन्होंने तेरी नहीं मानी और न तेरी व्यवस्था पर चले ... इस कारण तू ने उन पर यह सब विपत्ति डाली है।* अब इन दमदमों को देख, वे लोग इस नगर को ले लेने के लिये आ गए हैं इन चढ़े हुए कसदियों के वश में किया गया है। जो तू ने कहा था वह अब पूरा हुआ है (यिर्म. 32:21-24)।

यिर्मयाह जैसे नबी को अपने समय के लोगों को विश्वास करवाने के लिए कठिनाई थी कि यदि वे पश्चाताप नहीं करते और परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ते तो वे अपना देश गँवा लेंगे। उन दिनों के यहूदियों ने कुछ आज के लोगों की तरह, इस तथ्य को स्वीकार करने से इनकार दिया कि देश के प्रति जो भविष्यवाणियां थीं वे प्रतिबंधात्मक थीं। लोगों ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के एक पक्ष को ही समझा जो उसने उनके पूर्वजों के साथ शपथ खाई थी, उसी को पूर्ण समझते रहे। उन्होंने उस सच्चाई को अनदेखा कर किया कि उन्हें परमेश्वर के प्रति और मूसा की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहना है।

2. *सिंहासन प्रतिज्ञा की प्रतिबंधात्मक प्रकृति।* परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाएँ बिना किसी शर्त के सामने आती हैं क्योंकि उसकी स्पष्ट शर्तों का प्रत्येक संदर्भ को नहीं बताया गया है। परमेश्वर की इस शपथ का वर्णन 2 शमूएल 7:16 में दाऊद के सिंहासन से सम्बन्धित है: "तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी।" इस घोषणा के कारण कई यहूदियों का विश्वास था कि परमेश्वर यरूशलेम का कभी पतन नहीं होने देगा या दाऊद की राजगद्दी का कभी अन्त नहीं होगा, यह परवाह किए बिना कि देश चाहे कितना भी भ्रष्ट या मूर्तिपूजक हो जाए या लोग चाहे मूसा की वाचा के प्रति कितने भी विश्वासघाती हो।

भजन संहिता 89 समस्या का उदाहरण देता है। लेखक ने शपथ के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की बड़ाई करते हुए लिखना आरम्भ किया जो उसने दाऊद के साथ यह कहते हुए खाई, "मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ *[शाबा]* खाई है, कि मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूंगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक बनाए रखूंगा" (भजन 89:3, 4)। तब, दाऊद उसके अभिषिक्त की बुलाहट को और परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध

को दुहराने के बाद, भजनकार ने परमेश्वर के वचनों को दुहराया "एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ *[शाबा]* खा चुका हूं; मैं दाऊद को कभी धोखा न दूंगा। उसका वंश सर्वदा रहेगा, और उसकी राजगद्दी सूर्य की नाई मेरे सम्मुख ठहरी रहेगी। वह चन्द्रमा के समान, और आकाश मण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी के समान सदा बना रहेगा" (भजन 89:35-37)।

परन्तु, भजन के दूसरे भाग में विषय भिन्न है। ऐसा दिखाई देता है जैसे कि परमेश्वर का न बदलने वाला प्रेम बदल गया है; दाऊद के लिए बनाई गई वाचा प्रतिज्ञा के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता पर प्रश्न चिन्ह था। परमेश्वर के "अभिषिक्त" (राजा) को "छोड़ दिया और त्याग दिया" (भजन 89:38), और जिस बात के लिए परमेश्वर ने शपथ खाई थी वह कभी नहीं हुई: "तू अपने दास के साथ की वाचा से घिनाया, और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है। तू ने उसके सब बाड़ों को तोड़ डाला है, ..." (भजन 89:39, 40)। असम्भव बात भाप बनकर उड़ गई: "तू ने उसका तेज हर लिया है और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है" (भजन 89:44)। इसके साथ, भजनकार शोकाकुल प्रश्न को उठाता है: "हे प्रभु तेरी प्राचीन काल की करुणा कहां रही, जिसके विषय में तू ने अपनी सच्चाई की शपथ *[शाबा]* दाऊद से खाई थी?" (भजन 89:49)।

यह दुख की बात थी, निस्संदेह, यरूशलेम का पतन हो गया था, दाऊद का घराना उठ गया था, और परमेश्वर के लोगों का देश छिन गया था: परन्तु भजनकार की समझ इस समय गलती पर थी क्योंकि उसने दाऊद की वाचा को देखा था, इसके बजाए मुख्य रूप से मूसा की वाचा को नहीं। उसने वही गलती की जो आज कुछ यहूदी और ईवैन्जेलिकल कलीसियाएँ दाऊद के प्रति परमेश्वर की शपथ को सम्पूर्ण और बिना शर्त के देखते हुए करती हैं, जब, वास्तव में, अन्य अंश इसके प्रतिबंधात्मक प्रकृति को प्रकट करते हैं।

इसका मुख्य उदाहरण यरूशलेम में मन्दिर के अर्पण के सम्बन्ध में प्रकट हुआ है, जब परमेश्वर ने सुलैमान राजा से कहा, कि सिंहासन, राज्य, देश, और मन्दिर की प्रतिज्ञाएँ प्रतिबंधात्मक थीं। उसने कहा था कि इस्राएल यह सभी प्रतिज्ञाएँ को गँवा बैठेगा यदि वे परमेश्वर यहोवा के प्रति विश्वासघाती हों और अन्य देवताओं की पूजा करें। सुलैमान की प्रार्थना के उत्तर में 1 राजा 8 में परमेश्वर ने कहा,

> जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन [मन्दिर] तू ने बनाया है, उस में मैंने अपना नाम सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया है। ... यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मन की खराई और सिधाई से अपने को मेरे सामने जानकर चलता रहे। ... तो मैं तेरा राज्य इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर करूंगा; जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था। ... परन्तु यदि तुम लोग और तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें ... और जाकर पराये देवताओं की उपासना करें और

> उन्हें दंडवत करने लगें, तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूंगा और इस भवन [मन्दिर] को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूंगा; और सब देशों के लोगों में इस्राएल की उपमा दी जायेगी और उसका दृष्टान्त चलेगा (1 राजा 9:3-7)।

दाऊद के भौतिक सिंहासन की अस्थाई प्रकृति पर भजन 132:11, 12 में ज़ोर दिया गया है, जहाँ पर परमेश्वर की शपथ का निर्वाह मूसा की वाचा के प्रति उसके लोगों के आज्ञाकारी होने के आधार है:

> यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है
> और वह उस से न मुकरेगा:
> "कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊंगा।
> यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें
> और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा,
> उस पर चलें, तो उनके वंश के लोग भी
> तेरी गद्दी पर युग - युग बैठते चले जाएंगे।"

यहोवा का "यदि" योग्य ठहरने वाले इस कथन में दर्शाए गए हैं कि दाऊद और उसके घराने के लिए उसकी प्रतिज्ञाएँ पूर्ण नहीं थीं।

3. *वापसी प्रतिज्ञा की प्रतिबंधात्मक प्रकृति।* बहुत सी भविष्यवाणियों ने वापसी और बंधुआई के ठहराए हुए समय के बाद बंधुआई से प्रतिज्ञा के देश में सम्मिलन के साथ ही साथ दाऊद के सिंहासन की पुनःस्थापना के विषय बताया (यहेज. 37:1-28; यिर्म. 23:1-8)। यह आशाएँ भी लोगों के परमेश्वर की ओर मुड़ने पर ही निर्भर थीं। इसका एक विचारणीय उदाहरण 2 इतिहास 30 में पाया जाता है। इस्राएल के उत्तरी राज्य के अश्शूर के द्वारा पतन के बाद, हिज़किय्याह ने यहूदा में सुधार किया। उसने उनके लोगों और जो लोग अश्शूर की बंधुआई से वहाँ बच गए थे उनके बीच में एकता को बढ़ावा देने की इच्छा की। राजा ने उस क्षेत्र में जो पहले इस्राएल था संदेशवाहक भेजे और सारे यहूदा देश के यहूदियों को निमन्त्रण पत्र दिए गए जो देश में बाकी थे कि वे यरूशलेम में एकत्र हों और इस फ़सह के पर्व पर परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को फिर से नया करें (2 इतिहास 30:1-5)। हिज़किय्याह के निमन्त्रण में कहा गया,

> हे इस्राएलियो! अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो, कि वह अश्शूर के राजाओं के हाथ से बचे हुए तुम लोगों की ओर फिरे। और अपने पुरखाओं और भाइयों के समान मत बनो, जिन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था, और उसने उन्हें चकित होने का कारण कर दिया, जैसा कि तुम स्वयं देख रहे हो। अब अपने पुरखाओं के समान हठ न करो, वरन यहोवा के आधीन हो कर उसके उस पवित्र स्थान में आओ जिसे उसने सदा के लिये पवित्र किया है, और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, कि उसका भड़का हुआ क्रोध तुम पर से दूर हो जाए। यदि तुम यहोवा की ओर फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयों और लड़के बालों को बन्धुआ

बना के ले गए हैं, वे उन पर दया करेंगे, और वे इस देश में लौट सकेंगे क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुंह तुम से न मोड़ेगा (2 इतिहास 30:6-9)।

अश्शूर की बंधुआई से वापसी भी इस्राएल, उत्तरी राज्य के बचे हुए लोगों के पश्चाताप पर ही निर्भर होगी। परमेश्वर की उपासना करने के लिए उनको यरूशलेम में अपने यहूदी भाइयों के साथ मिलने के लिए सहमत होना था। परन्तु, हिज़कियाह के द्वारा भेजे गए निमन्त्रण के संदेशवाहकों को मिली प्रतिक्रिया निराशाजनक थी, जैसे कि विवरण वर्णन करता है:

इस प्रकार हर एक एप्रैम और मनश्शे के देश से नगर-नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु [उत्तरी इस्राएल के देश के पुराने गोत्रों ने] उन्होंने उनकी हंसी की, और उन्हें ठट्ठों में उड़ाया। तौभी अशेर, मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन हो कर यरूशलेम को आए (2 इतिहास 30:10, 11)।

बाइबल के इस अंश का यही तात्पर्य है कि इस्राएल के कुछ लोगों ने ही परमेश्वर के सामने स्वयं को नम्र किया, जबकि उत्तरी राज्य के अधिकांश बचे हुए लोगों ने हिज़कियाह के पश्चाताप के लिए निमन्त्रण और यहोवा की ओर मुड़ने का मज़ाक उड़ाया। इन दो राज्यों के बीच कड़वे रिश्तों के लम्बे इतिहास से इस्राएल में बचे हुए लोगों हृदयों की कठोरता अधिक बढ़ गई, यहूदा के साथ मिलने के इनकार ने भाइयों की अश्शूर से वापसी की और बाबुल की बंधुआई के बाद यहूदा के साथ मिलने की सम्भावना को निरस्त कर दिया।

देश की प्रतिज्ञा की प्रतिबंधात्मक प्रकृति के आगे का प्रमाण, बंधुआई से वापसी के साथ, नहेम्याह यहूदियों के समूह जो बंधुआई के बाद यरूशलेम में लौट आए थे उनकी प्रार्थना में मिलता है:

उस वचन की सुधि ले, जो तू ने अपने दास मूसा से कहा था, "कि यदि तुम लोग विश्वासघात करो, तो मैं तुम को देश-देश के लोगों में तितर बितर करूंगा। परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी आज्ञाएं मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश की छोर में भी हों, तौभी मैं उन को वहां से इकट्ठा कर के उस स्थान में पहुंचाऊंगा, जिसे मैं ने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है" (नहेम्य. 1:8, 9)।

इस्राएल का बंधुआई से लौटना और देश को फिर से अधिकार में लेना लोगों का परमेश्वर की ओर मुड़ना और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने पर निर्भर था। इस महान आशा की भविष्यवाणियां (देखें यिर्म. 23; यहेज. 37) सीमित और आंशिक रूप से पूरी हुई थीं। क्योंकि बंधुआई के अधिक संख्या में लोगों ने पश्चाताप कभी नहीं किया। यशायाह इस्राएल को परमेश्वर के "बहरे" और "अन्धे" "सेवकों" के रूप में चित्रित करता है, परमेश्वर की बुलाहट को सुनने और उसकी व्यवस्था को मानने का इनकार, यहाँ तक बंधुआई में "लुट जाने और टूट

जाने" के बाद भी (यशा. 41:8; 42:18-22)। अन्य शब्दों में, अधिकांश लोग अपने दुखद अनुभव से सीखने और परमेश्वर की ओर मुड़ने से विफल हो गए।

हम नहीं जानते कि इस्राएल और यहूदा से कितने लोग बंधुआई में गए थे। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि बंधुआई में जाने वालों की संख्या 300,000 से 500,000 थी, 732 ई.पू. में तिग्लत्पिलेसेर के साथ आरम्भ हुई बड़ी संख्या में इस्राएल के गलील और यरदन से लोगों को हटा कर ले गया। इसके एक दशक बाद 722 ई.पू. में सामरिया के पतन के साथ जाति का पूरी तरह से विनाश हो गया। पवित्रशास्त्र मात्र यही कहता है कि अश्शूर का राजा "इस्राएलियों को अश्शूर बंदी बनाकर लेकर ले गया" (2 राजा 17:6)। लगभग बीस वर्ष के बाद, सन्हेरीब, एक अन्य अश्शूरी राजा ने यहूदा के दक्षिणी राज्य पर आक्रमण कर दिया क्योंकि राजा हिज़कियाह ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया था (2 राजा 18:7) और दूसरे देशों के साथ रक्षात्मक गठबंधन किए। सन्हेरीब की सेना ने देश को तहस नहस कर दिया, और उसने लोगों को बंदी बनाकर अपनी विजय का उत्सव किया। यह विवरण बताते हैं कि वह 200,000 से भी अधिक लोगों को बंदी बनाकर ले गया, यहूदा के 46 नगरों का नाश करने बाद और हिज़कियाह को यरूशलेम[22] में ही "पिंजरे में पंछी के समान" कैद कर दिया (देखें 2 राजा 18:13)। 701 ई.पू. में इस घेराबंदी के दौरान राजधानी को नाश नहीं किया, हिज़कियाह की निष्ठावान प्रार्थना और परमेश्वर के ईश्वरीय हस्तक्षेप के कारण से (2 राजा 19:14-35)।

लगभग एक शताब्दी के बाद, अश्शूर की अन्तिम हार और नबूकदनेस्सर के उत्थान के बाद, यहूदी लोग बेबीलोन में बंदी बनाकर ले जाए गए। यह तीन चरणों में हुआ। पहली बार 605 ई.पू., राजा यहोयाकीम के राज्य में हुआ, जब नबूकदनेस्सर की सेना दानिय्येल और अन्य जवानों को यरूशलेम से बाबुल ले गई (2 राजा 24:1-3; दानिय्येल 1:1-4)। दूसरा समूह 597 ई.पू. में ले जाया गया जब राजा यहोयाकीन, राजकीय परिवारों और दस हज़ार प्रमुख नागरिकों को यरूशलेम से बाबुल ले गया (2 राजा 24:8-14)। 586 ई.पू. में सिदकिय्याह राजा की अधीनता में अन्तिम विद्रोह हुआ, बाबुलवासियों ने यरूशलेम, इसकी शहरपनाह और सुलैमान के मन्दिर को नाश कर दिया। उनकी सेना ने यहूदा को उजाड़ दिया। उन्होंने दाख की बारियों में काम करने वाले और खेतीबाड़ी करने वाले कंगाल लोगों को देश में रहने दिया, जिन्हें राजा को अपने कर देने थे (2 राजा 25:1-12)। बंदी होने वालों की इस बड़ी संख्या में, जितना हम जानते हैं, बेबीलोन के पतन और फारस के राजा बंदियों को अपने देश और पूर्वजों के घरों में वापिस जाने की अनुमति मिलने के बाद मात्र 10 या 15 प्रतिशत लोग ही यहूदा देश में वापिस आए (देखें एज्रा 2:64; 8:1-20; नहेम्य. 2:11, 12)।

कुस्रू के आदेश के बाद कि बंदी अपने देश को वापिस जा सकते हैं, तो दाऊद राजा के द्वारा देश के पुनःस्थापन का पूर्वकथित प्रतापी दर्शन के साथ हुआ - परन्तु उस स्तर तक नहीं हुआ जिस स्तर तक परमेश्वर ने चाहा था, क्योंकि

यहूदियों का अधिकांश हिस्सा कभी वापिस नहीं गया। "सनातन वाचा" का अभिन्न भाग जो दाऊद के साथ बांधी गई थी, जिसे यशायाह ने "दाऊद पर अटल करुणा की वाचा" कहा (यशा. 55:3), उसके सिंहासन और राज्य का पुनःस्थापन भी सम्मिलित था क्योंकि उसे "लोगों की साक्षी [अन्य जाति]" बनना था (यशा. 55:4)। दाऊद के अधिकांश विश्वासयोग्य सैनिक अन्य जातियों में से थे जो यहोवा और उसके प्रति निष्ठावान थे, इनमें हित्ती ऊरिय्याह (2 शमूएल 11:3-11), राजा के 600 पलिश्ती अंगरक्षक (2 शमूएल 15:18-22), और "अन्य योद्धा पुरुष" थे (2 शमूएल 23:8-39; 1 इतिहास 11:10-47)। दाऊद का अपने शत्रुओं को हराने का एक तरीका था और फिर उनको यहोवा की और स्वयं की सेवा के लिए परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में गले लगाने का एक तरीका था। यहूदी, परमेश्वर के लोग होने के नाते, उनको इस आदर्श का अनुसरण करना और "जातियों को बुलाना" चाहिए था जिसे "वे नहीं जानते"; और यशायाह के द्वारा उनको यही बताया गया था, "... ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानती तेरे पास दौड़ी आएंगी, वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है" (यशा. 55:5)।

परमेश्वर के लोगों का बंधुआई से वापिस आना एक विमोचक कार्य था जिसने अन्य जाति लोगों को विश्वास दिलाना था कि यहूदी एक सच्चे सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की सेवा करते है, ताकि वे लोग परमेश्वर की ओर मुड़ते और उद्धार पाते। इस्राएल परमेश्वर का "सेवक" होने के नाते "याकूब के घराने को उठना था और इस्राएल के बचे हुओं को पुनःस्थापना करना था"; इसके अतिरिक्त परमेश्वर ने कहा, "मैं तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए" (यशा. 49:6)। अन्य जातियों की स्वीकृति लोगों की वाचा का एक भाग था जिसके विषय निश्चितरूप से बंधुआई से वापिस आने वालों में परमेश्वर का लक्ष्य था।

निष्कर्ष। नए नियम में किसी भी सांसारिक देश की प्रतिज्ञा नहीं की गई, और बाइबल मसीह के दोबारा आने पर यहूदियों के फिलिस्तीन वापिस जाने के विषय कुछ नहीं कहती। हम ऐसी किसी भी प्रतिज्ञा को नहीं पाते हैं जो मन्दिर के दोबारा बनने या मूसा की वाचा को जानवर की बलि के साथ पुनःस्थापन विरासत के रूप में उनको प्राप्त करनी है, जैसा कि कुछ लोग ऐसा विश्वास करते हैं। जो लोग पवित्र शास्त्र की व्याख्या इस तरह से करते हैं वे बाइबल अंश को इन विचारों से पढ़ते हैं जो उनके लिए अनजान हैं और बाइबल के ऐतिहासिक संदर्भ को अनदेखा करते हैं जिनको नबियों ने बताया है। जिस घटना का वे वर्णन करते हैं वे ईश्वरीय ज्ञान की घड़ी को पुरानी वाचा की ओर वापिस ले जाते हैं। इसके बजाए, हमें नई और "उत्तम वाचा" की वास्तविकता की सराहना करनी चाहिए (इब्रा. 7:22) और उन प्रतिज्ञाओं को गले लगाना चाहिए जो अब यीशु मसीह के द्वारा हमारे पास हैं (इब्रा. 7:19-8:13)।

परमेश्वर ने अब्राहम के शारीरिक वंश के लिए कनान देश के बिना शर्त या अटल वरदान नहीं बनाए। इसके विपरीत, इस्राएलियों का इसके लिए कभी भी अधिकार नहीं था, वह हमेशा परमेश्वर के देश में "पराये" और "किराएदार" की तरह वासी थे (लैव्य. 25:23; 1 इतिहास 29:15)। यहूदी लोगों के अगुओं के द्वारा परमेश्वर का घोर अपमान उसके पुत्र का तिरस्कार और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना था जो उन्हें और सारी मानव जाति को पाप के अनंत परिणामों से बचाने आया था। अहंकार और हठीलेपन ने उनको "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश" करने के लिए "जल और आत्मा से" नया जन्म पाने की ज़रूरत को देखने से उनको दूर रखा (यूहन्ना 3:3-5; देखें मरकुस 1:4; लूका 3:3)।

अधिकांश समय, यहूदियों ने परमेश्वर के राज्य को अस्थाई, संकीर्ण और राष्ट्रवादी दृष्टि से देखा। जो अगुवे थे उन्होंने यीशु को मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने और ईशनिन्दा की दृष्टि से देखा जो परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता था। उन्होंने इसको झूठे मसीह होने का खतरा मान लिया, जो आम लोगों को दाऊद के नए राज्य के सपने दिखाकर और उनकी खानपान की आशा से कहीं पथ भ्रष्ट न कर दे। निस्संदेह यहूदी अगुवे जानते थे कि इस तरह की कार्यप्रणाली उन पर रोमी साम्राज्य के क्रोध को लाएगी; यदि उनकी अपनी जान न गई तो उनके अधिकार छिन जाएँगे (यूहन्ना 11:47-53)। उनके हृदयों की कठोरता से, उन्होंने परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार करने के लिए और उसे क्रूस पर मरने का दण्ड देने के लिए राजनैतिक फायदे का पथ चुना।

परन्तु, पौलुस के अनुसार, इस्राएली लोगों के लिए अभी भी आशा थी। प्रेरित ने उन्हें परमेश्वर के जैतून के वृक्ष (उसके राज्य के लोग) की स्वाभाविक डालियों के रूप में कहा, जिन्हें उनके अविश्वास के कारण से काट दिया गया। उसने अन्यजातियों को विश्वास के द्वारा पेड़ में कलम बांधने के रूप में दर्शाया (रोमियों 11:17-20)। इसलिए, परमेश्वर की "दया" के अनुसार, *यदि* यहूदी लोग विश्वास की आज्ञाकारिता में आ जाएँगे, *तो* वे वापिस परमेश्वर के वृक्ष में "लगाए जाएँगे" और इस तरह से उद्धार पाएँगे (रोमियों 11:17-27)।

पौलुस यहूदी राज्य के देश जिसकी एक बार अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई थी राष्ट्रवाद में राजनैतिक छुटकारे की बात नहीं कर रहा था। न ही वह और न ही नया नियम का कोई अन्य लेखक इन बातों और शिक्षाओं को सम्बोधित करता है जो बाइबल के अनुसार प्रामाणिक न होने वाले ऐसे विचारों को बढ़ावा देते हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. जेरेमिआस, "נָבִיא," *थियोलोजिकल लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट* में, ट्रांस. मार्क इ. बिडल, एड. एर्न्स्ट जेन्नी एंड क्लॉस वेस्टरमैन (पिबडी, मास.: हैण्डरिक्सन पब्लिशर्स, 1997), 2:703. [2]जिस समय परमेश्वर ने अब्राहम को ऊर में पहली बार बुलाया उस समय वह पैंतीस वर्ष का रहा होगा। 12:4 और 16:3 के अनुसार, इस समय वह पिचासी वर्ष का होगा। इसलिए, लगभग पचास वर्ष बीत चुके थे, और उसके पास कोई भी बेटा नहीं था जो उसकी भूमि और सम्पत्ति का वारिस बने। [3]यह सेवक अब्राहम को उसकी हारान से कनान की यात्रा के दौरान जो हो

सकता है कि दमिश्क को होते हुए रही होगी उसमे मिला होगा (टीका देखें 12:4, 5)। [4]एन.आई.वी. के अनुसार "जो मेरी सम्पत्ति का वारिस होगा।" [5]विक्टर पी. हैमिलटन, "מֶשֶׁק," *TWOT* में, 1:535. [6]अल्फ्रेड जे. होर्थ, *आर्कियोलोजी एंड दी ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: बेकर बुक्स, 1998), 102-3. [7]अल्फ्रेड जेप्सेन, "אָמַן," *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट* में, ट्रांस. जॉन टी. विलिस, एड. जी. जोहान्स बोटरवेक एंड हेल्मर रिन्ग्ग्रेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. अर्डमैनस पब्लिशिंग कम्पनी, 1974), 1:308. [8]डेरिक सीटी. शेरिफस., "फेथ," में *डिक्शनरी ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटाटुक*, एड. टी. डेस्मंड अलेक्सेंडर एंड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, Ill.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 2003), 281-82. [9]NASB के कुछ मुद्रण "हाव यादा" को भजन संहिता 1:6 में निम्न स्तर पर "प्रमाणित" करते हैं। आमोस 3:2 में, यह शब्द "चुने गये" में अनुवाद किया गया है। वास्तव में, *यादा'* का अर्थ है घनिष्ठ रीति से "जानना," शारीरिक रूप से (4:1) या आत्मिक रूप से (होशे 2:20)। [10]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, दी न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री, vol. 1B (नैशविले: ब्रोडमैन & होलमैन पब्लिशर्स, 2005), 170.

[11]एरिका रेनर, ट्रांस, "ट्रीटी बिटवीन अशुरनिर्नारी वी ऑफ़ अस्सिरिया एंड मत'इलु ऑफ़ अर्पाद," इन *एनशन्ट नियर इस्टर्न टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू ओल्ड टेस्टामेंट*, थर्ड एड., एड. जेम्स बी. प्रिचार्ड (प्रिंसटन, एन जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 532. [12]फ्रान्ज़ रोसेन्थल, ट्रांस., "द ट्रीटी बिटवीन केटिके एंड अर्पद," *एन्शन्ट नियर इस्टर्न टेक्स्ट्स* में, 660. [13]मेसोपुतामिया के प्राचीन लोग, उन लोगों को *अम्मूरू* (अमोरी, पश्चिमी) जो सूरिया, लबानोन और पलिस्तीन (कनान) में रहते थे और इस शब्द का प्रयोग पुराने नियम में अनेक स्थानों में ऐसा ही रखा गया है। (ए. एच. सेयस एण्ड जे. ए. सोग्गीन, "अमोराइट्स," *इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया*, रिवाईज्ड एडीशन, संपादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली [ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग क., 1979], 1:113-14. [14]कालांतर में सोदोम और अमोरा के पाप इतने अधिक बढ़ गए थे कि अन्य जाति लोग भी जो उस क्षेत्र में रहते थे, इसके विरूध आवाज उठाने लगे और तब परमेश्वर ने उनके विरूद्ध न्याय किया (18:20, 21)। इसके बावजूद, परमेश्वर ने अब्राहम को यह वचन दिया कि यदि वहाँ दस धर्मी भी पाए गए तो वह सोदोम को नाश नहीं करेगा (18:32)। [15]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कंपनी, 1979), 239. [16]आर. के. हैरिसन, "ब्रुक आफ इजिप्ट," में *दि इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बाइबल एनसायक्लोपीडीया*, 1:549. [17]विभिन्न इब्रानी शब्दों के बावजूद, गिनती 34:5 और यहोशू 15:4 में "मिस्र का नाला נַחַל [*nachal*, *नाचाल]"* संभवतः उत्पत्ति 15:18 का "मिस्र का नदी נָהָר [*nahar*, *नाचार]"* ही है। [18]मैथ्यूस, 177. [19]अब्राहम "जब पचहत्तर वर्ष का था उसने हारान छोड़ा था" (12:4) और उसने कनान में दस वर्ष बिताए (16:3)। वह संभवतः अस्सी वर्ष का था जब उसने यह दर्शन पाया। जब हाजिरा ने 16:16 में इश्माएल को जन्म दिया उस समय वह छियासी साल का था। [20]देखें मत्ती 1:20; 10:31; 28:5; लूका 1:13, 30; 2:10; 5:10; 8:50; 12:7, 32; प्रेरितों. 27:24; प्रका. 1:17.

[21]इस मत के मानने वाले हैं: वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, *टूवार्ड रिडिस्कवरिंग दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिडस, मीश.: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1987), 150-55; रोनाल्ड बी. ऐलन, "द लैंड आफ इस्राएल," *इस्राएलः द लैंड एण्ड द पीपल,* संपादक एच. वायने हाऊस (ग्रैंड रैपिडस, मीश.: क्रेगेल पब्लिकेशंस, 1998), 24-28 और क्रैग ए. ब्लेशिंग एण्ड डरैल एल. बॉक, *प्रोग्रेसिव डिस्पेंसेशनालिज्म* (व्हीटन, इलीनॉइसः विक्टर बुक्स, 1993), 132-35. [22]ए. लियो ओपेनहमें, ट्रांस., "दि एन्नलस ऑफ सेन्हेरीब," इन *एशियंट नीयर ईस्टर्न टैक्सटस*, 288.